हिन्दी दैनिक

जौनपुर, लखनऊ व भदोहीं से प्रकाशित

देश की उपासना

www.Deshkiupasana.com
www.Deshkiupasana.in
www.Deshkiupasana.org

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

dku live &
dkunews24

वर्ष : 04 अंक–129 : जौनपुर, शुक्रवार 08 जुलाई 2022 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज –4 मूल्य : 2 रूपया

उत्तर प्रदेश में सुशासन का शतक –समीक्षक मृत्युंजय दीक्षित

हरदोई (अम्बरीष कुमार सक्सेना) : विश्व संवाद केन्द्र के समीक्षक मृत्युंजय कुमार दीक्षित के अनुसार प्रदेशमें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में बनी भाजपा सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल के सौ दिन सफलतापूर्वक पूरे कर लिए हैं और सरकार के सभी मंत्री अपना सौ दिन का रिपोर्ट कार्ड प्रस्तुत कर रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 2.0 का रिपोर्ट कार्ड प्रदेश सरकार की उपलब्धि ा यह भी रही कि आजमगढ़ और रामपुर के लोकसभा चुनावों में भाजपा की शानदार विजय हुई, विधान परिषद में कांग्रेस शून्य हो गई और समाजवादी दल से नेता प्रतिपक्ष का पद भी जा रहा है। प्रदेशका जनमानस बार –बार योगी सरकार की बुलडोजर नीति पर अपनी मुहर लगाकर संदेशदे रहा है। प्रदेशमें आज बुलडोजर नीति के कारण अपराधियों में भय है जिसके कारण बहुत से अपराधी खुद जाकर थाने में आत्मसमर्पण कर रहे हैं। आज अपराधियों को अच्छी तरह से पता है कि अगर उन्होंने कोई गलती की तो बुलडोजर चलना तय है। अभी कानपुर सहित कुछ जिलों में नुपूर शर्मा विवाद की आड़ में कुछ अराजक तत्वों ने प्रदेशका वातावरण खराब करने का प्रयास किया अब वह लोग उसका परिणाम भुगत रहे हैं। प्रदेशमें कानून का राज स्थापित होने के कारण ही प्रदेशमें निवेश बढ़ रहा है । प्रदेशमें पाक्सो एक्ट के तहत भी अपराधियां को तीव्र गति के साथ सजा दिलायी जा रही है। जिसके कारण आज प्रदेशकी महिलाएं व बच्चियां अपने आपको सुरक्षित महसूस कर रही हैं। प्रदेशके मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सुशासन एक्सप्रेस पर सवार होकर सेवा भावना से ओतप्रोत एवं सुरक्षा की गारंटी के साथ गतिमान हैं। प्रदेशके मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में अपने उज्ज्वल भविष्य को संवरते देखकर किसान ,युवा, मजदूर और महिला वर्ग उत्साहित है। श्रेष्ठ नीति और नीयत के साथ योगी आदित्यनाथ जी की टीम प्रदेशको विकास के पथ पर आगे ले जा रही है वहीं दूसरी ओर प्रदेशका विपक्ष निराशा के अंधकार में डूबकर लगातार गलतियां कर रहा है और धराशायी हो रहा है। मुख्यमंत्री ने रिपोर्ट कार्ड प्रस्तुत करते समय कहा कि, "भाषण पर विश्वास नहीं, जो कहा सो किया।" यही कारण है कि आज प्रदेश प्रगति के पथ पर दौड़ रहा है तथा विकास के साथ –साथ पौधरोपण भी हो रहा है जिसके कारण आज प्रदेश में हरियाली का क्षेत्रफल भी बढ़ रहा है। एक जिला एक उत्पाद की योजना की चर्चा आज पूरे विश्व में हो रही है । अभी प्रध ाानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने विदेशी दौरे में प्रमुख विदेशी राजनेताओं को उत्तर प्रदेश के उत्पाद उपहार में दिए। प्रदेशके मुख्यमंत्री दावा कर रहे हैं कि सौ दिन में दस हजार लोगों को सरकारी नौकरी दी जा चुकी है। तीसरी ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी में 80 हजार करोड़ की परियोजनाओं का शिलान्यास हुआ। एक लाख 50 हजार उद्यमियों – कारीगरों को 16 हजार करोड़ रूपये का लोन वितरण किया गया है। 12 हजार करोड़ रूपये से अधिक का गन्ना भुगतान किया जा चुका है। 17 लाख युवाओं को स्मार्टफोन व टैबलेट दिए जा चुके हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि अब बुंदेलखंड एक्सप्रेस वे का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अगले सप्ताह उसका लोकार्पण करने के लिए आ रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण यह है कि वह बिना कुछ कहे कि समान नागकिर संहिता को लागू किए दे रहे हैं। योगी सरकार ने भ्रष्टाचार और अपराधियों के खिलाफ जीरो टालरेंस

की नीति को आगे बढ़ा दिया है और अब प्रदेशमें कानून का राज स्थापित है। प्रदेशमें जिस किसी ने भी कानून व्यवस्था के साथ खेलने का प्रयास किया है उसके विरूद्ध त्वरित कानूनी कार्यवाही की गयी है धार्मिक स्थलों पर लगे 1 20 000 से अधिक लाउड स्पीकरां की आवाज या तो कम की गयी या फिर बिना हो हल्ला और बिना किसी प्रतिरोध के उन्हें हटवाया गया है। यह जन विश्वास का प्रतीक है कि समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों ने इस काम का पूरा समर्थन किया है। सड़क पर नमाज बंद हो गयी है तथा सौ दिनों में माफिया –अपराधियां की 844 करोड़ की अवैध संपत्ति को जब्त किया जा चुका है। प्रदेशमें अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत अमृत तालाबों का निर्माण किया जा रहा है जिससे गांवों में मनरेगा योजना के तहत रोजगार को बढावा भी मिल रहा है। आज प्रदेशमें कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां पर विकास की गंगा न बह रही हो। प्रदेशसरकार तीव्र गति के साथ लोगों को उनके घर का सपना पूरा करने में सहयोग कर रही है प्रधानमंत्री आवास योजना और मुख्यमंत्री आवास योजना में गरीबों के घरों का निर्माण तेज गति से हो रहा है तथा जल्द ही एक लाख ग्रामीणों को अपने घर की चाबी मिलने जा रही है। योगी 2.0 में भी किसानों की आय को दोगुनी करने के लिए सरकार लगातार कदम उठा रही है। सरकार ने बंजर, बीहड़ भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय किसान समृद्धि योजना के लिए 602 करोड़ रूपए स्वीकृत किए हैं। पीएम किसान सम्मान निधि भी सभी किसानां को समय पर मिल रही है। जिलों में 54 कृषि कल्याण केंद्र स्थापित हो गए हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी प्रदेशगतिषक्ति योजना के साथ प्रगति के पथ पर अग्रसर है। एक जनपद एक मेडिकल कालेज की योजना लगातार आगे बढ़ रही है। सरकार ने स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए 108 एंबुलेस सेवा में 812 नई एंबुलेंस गाड़िया षामिल की है। प्रदेश भर में आरोग्य मेलों का आयोजन किया जा रहा है। योगी सरकार अपनी नई सोच और अनाथक परिश्रम के जिस मार्ग पर अग्रसर है वह उत्तर प्रदेशकी छवि को समृद्ध और गौरवशाली बनाने मे कारगर साबित हो रहा है । यहां युवकों को नौकरी मांगने वाला की बजाय उनमें उद्यमिता का भाव भरकर उन्हें नौकरी देने लायक बनाने में भी सफलता मिली है। ईज आफ डुडंग बिजनेस के अंतर्गत 189 मदों एवं ईज आफ लिविंग के 21 मदों की कार्यवाही पूर्ण हो चुकी है। आज प्रदेशदुग्ध उत्पादन सहित कई क्षेत्रां में नम्बर वन बन चुका है। ईज आफ डूडंग बिजनेस में प्रदेशको अचीवर्स स्टेट का स्थान मिला है। प्रदेशमें देशका सबसे लम्बा गंगा एक्सर्प्रेस वे का कार्य प्रगति पर है। आज प्रदेशतेज गति से कई क्षेत्रों में लगातार विकास की नई ऊचांइयों को छू रहा है। प्रदेशकी बुजुर्ग व विधवा महिलाओं , दिव्यांगजनां को समय पर पेंशन प्राप्त हो रही है। प्रदेशके विकास की गति को तेज करने के लिए बजट में 4000 करोड़ की नई योजनाएं जोड़ी गई हैं। बड़ी सड़कों एवं सेतुओं के निर्माण के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों के लिए सर्व ऋतु सम्पर्क मार्गों की योजना लाई गयी है। जनजीवन को सरल बनाने के लिए बाईपास, रिंग रोड तथा चौराहों पर फ्लाईओवर हेतु 600 करोड़ की व्यवस्था की गई है। जल जीवन मिषन के अन्तर्गत 19,500 करोड़ रूपए की व्यवस्था की गई है। प्रदेशमें विकास की नई उड़ान चल पड़ी है जिसके कारण प्रदेशजल्द ही पांच इंटरनेशनल एयरपोर्ट वाला प्रदेशबन जाएगा। प्रदेशमें 75 गन्तव्यां तक वायुसेवा की सुविधा उपलब्ध हो चुकी है तथा गोरखपुर से दिल्ली के लिए 14 फ्लाइट तक बढ़ाने में सफलता मिल चुकी है। प्रदेशमें परिवहन सेवाओं का विकास तथा उनका समग्र आधुनिकीकरण किया जा रहा है। गावों में ग्रामीण जीवन में बदलाव के लिए भी कई कदम सरकार की ओर से लगातार उठाए जा रहे हैं। सभी ग्राम पंचायतों में ग्राम सचिवालयों का निर्माण कार्य प्रगति पर है। प्रदेशमें मातृशक्ति के सम्मान हेतु कई योजनाएं संचालित की जा रही हैं। सभी जनपदो में निःशुल्क अभ्युयदय योजना का संचालन किया जा रहा है। प्रदेशमें धार्मिक एवं सांस्कृ तिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार निरंतर कदम उठा रही है। जिसके कारण 172 पर्यटन विकास परियोजनाएं पूर्ण हो चुकी हैं। अयोध्या ,मथुरा व काशी का विकास कार्य प्रगति पर है। प्रदेश के मुख्यमंत्री बहुत ही संकल्पवान तथा ऊर्जावान है जिनके नेतृतव में प्रदेश विकास के पथ पर अग्रसर है ।

'भूकंप आपदा पर एनडीआरएफ और जिला प्रशासन जौनपुर ने किया संयुक्त मॉक अभ्यास'

जौनपुर सू.वि. : आपदा जोखिम नियुनीकरण हेतु उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश के हितधारकों के साथ कमान्डेंट मनोज कुमार शर्मा के कुशल दिशा–निर्देशन में 11 एनडीआरएफ वाराणसी की टीमें विभिन्न एजेंसियों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए संयुक्त मॉक अभ्यास का आयोजन कर रही हैं, उसी कड़ी में आज कलेक्ट्रेट कार्यालय, विकास भवन, जिला–जौनपुर में 11 एनडीआरएफ के सहायक कमांडेंट स्वराज कमल के अगुवाई में जिला प्रशासन जौनपुर एवं अन्य हितधारकों द्वारा संयुक्त रूप से भूकंप पर एक मॉक अभ्यास आयोजित किया गया। मॉक अभ्यास के दौरान भूकंप पर एक परिदृश्य को चित्रित किया गया, जिसमें कलेक्ट्रेट कार्यालय, विकास भवन की एक इमारत ढह गई और कुछ कर्मचारी जख्मी हालत में फंस गए। तदनुसार, ई ओ सी (इमेरजेन्सी आपरेशन सेटर) को घटना के बारे में सूचित किया गया, जिसने एनडीआरएफ के नियंत्रण कक्ष एवं सभी संबंधित हितधारकों को आपात प्रतिक्रिया के लिए सूचित किया। एनडीआरएफ की टीम के पहुंचने से पहले सतही पीड़ितों को प्रथम उत्तरदाताओं ने सुरक्षित निकाल लिया। घटना स्थल पर पहुंचने पर एनडीआरएफ की टीम ने प्रारंभिक आकलन किया और एक साथ ऑपरेशन का बेस, कमांड पोस्ट, मेडिकल पोस्ट, कम्युनिकेशन पोस्ट स्थापित किए गए। आकलन के तुरंत बाद टीम ने रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया और कटिंग उपकरणों का इस्तेमाल करते हुए इमारत में क्षैतिज पहुँच बनाकर गंभीर रूप से फंसे पीड़ितों को बचाया। दूसरी मंजिल में फंसे अन्य पीड़ितों को विभिन्न रस्सी बचाव तकनीकों से बचाया गया। पीड़ितों को मेडिकल एजेंसियों द्वारा अस्पताल पूर्व उपचार देने के बाद

अस्पताल पहुंचाया गया। यह पूरा मॉक अभ्यास इंसिडेंट रिस्पांस सिस्टम के दिशानिर्देशों के अनुसार आयोजित किया गया था और पूरी प्रक्रिया का पालन किया गया। इस मॉक अभ्यास को स्थानीय सांसद श्याम सिंह यादव , जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अजय सहानी, मुख्य विकास अधिकारी साई तेजा सीलम, अपर जिलाधिकारी वित्त राजस्व रामप्रकाश, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट की मौजुदगी में आयोजित किया गया तथा अन्य हितधारकों मे डीडीएमए, पुलिस, पीएसी, अग्नि शमन विभाग, स्वास्थ्य विभाग, मीडिया कर्मियों एवं स्थानीय लोगों ने भाग लिया। एनडीआरएफ बचाव दल द्वारा प्रदर्शित पेशेवर कौशल की जिला प्रशासन एवं अन्य हितधारकों द्वारा अत्यधिक सराहना की गई।

गांव में विकास की हकीकत देखने पहुंची नीति आयोग की टीम

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : विकास खण्ड के जमालपुर गांव मे लखनऊ से चल कर पहुंची नीति आयोग की तीन सदस्यीय टीम ने गांव में हुए विकास कार्यो को देखा। इसके अलावा शिक्षा,स्वास्थ्य ,आंगनवाड़ी समेत अन्य विभागों के द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों के विषय में जानकारी प्राप्त की है। ग्रामीण क्षेत्रो में हुए विकास जमीनी हकीकत जानने पहुंची लखनऊ की टीम ने जमालपुर गांव के विकास कार्यो का लिया जायजा। उक्त गांव मे शुक्रवार को लगभग दस बजे लखनऊ की तीन सदस्यीय जांच टीम कम्पोजिट विद्यालय जमालपुर पर पहुंची।इस टीम के सदस्य रविन्द्र कुमार, अजय सिंह व अंजनी ने कम्पोजिट विद्यालय मे बने भवन, रसोई घर, हैंडपंप व शौचालय मे साफ–सफाई का निरीक्षण किया।शौचालय के ऊपर बालक व बालिका के उपयोग करने के लिए कुछ भी लिखा नही होने पर नाराजगी जताई। इसके बाद आंगनवाड़ी भवन मे बैठी लाभार्थी महिलाओ व बच्चो की माताओ से योजना के संचालन की हकीकत के बारे में पूछताछ की। बच्चो का वजन व लम्बाई की नाप कराया लाभार्थियो द्वारा साथ लाए हुए प्रोफार्मा पर फीडबैक लिया।इसके बाद टीम स्वास्थ्य विभाग द्वारा चलाए जा रहे टीकाकरण, पशुओ मे टीकाकरण व कृषि विभाग द्वारा किसानो के हित मे चलाई जा रही योजनाओ के बारे में किसानो से चर्चा किया। टीम के सदस्यो से ग्रामीणो ने आवास, शौचालय, राशनकार्ड मे नाम न होने व राशनकार्ड न मिलने की बात कही। जिसके बाद टीम पंचायत भवन का निरीक्षण करने पहुंची। टीम के सदस्यो ने बताया की जांच करने के बाद तैयार आकडा सरकार को उपलब्ध ा कराया जायेगा। टीम के आने की सूचना पर सुबह से ही विद्यालय पर सभी विभाग के अधिकारी व कर्मचारी सुबह से ही डटे रहे। इस दौराएन खंण्ड विकास अधिकारी सचिन कुमार भारतीय व अस्मिता सेन,ए डी ओ पंचायत रामनिहोर ,खण्ड शिक्षाधिकारी वसंत कुमार शुक्ला, सी डी पी ओ दीपक चौबे, अस्पताल के अधीक्षक डा0 विशाल सिंह यादव, डा. राजीव वर्मा, राहुल यादव, मनीष वर्मा ,विद्यालय के शिक्षक सहित गांव के महिला व पुरुष मौजूद रहे।

गद्दोपुर का पंचायत भवन जर्जर : खुले मे हो रही ग्राम पंचायत की बैठक

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : पंचायत भवन को सजाने व संवारने के साथ कम्प्यूटर आदि से लैश कर ग्रामीणो को हर सुविधा प्रदान करने का शासनादेश गद्दोपुर ग्राम पंचायत के लिये सपना साबित हो रहा है। बता दे कि महराजगंज विकास खण्ड मुख्यालय मे करीब चार किमी पश्चिम महराजगंज राजाबाजार सड़क से करीब सौ मी की दूरी पर लाखो रूपये की लागत से ग्राम पंचायत गद्दोपुर का पंचायत भवन सन् 2000 ई0 मे बाईस बर्ष पहले निर्माण कराया गया था !करीब दस बर्ष बीतते बीतते जीर्ण शीर्ण अवस्था मे हो गया ! एकांत मे खडा जर्जर भवन गिरने के कगार पर है जिसकी दीवारे छत बारजा सब क्षति ग्रस्त बुरी तरह फट कर लटक गये है खिड़की दरवाजे टूट चुके है वाउन्ड्रीवाल विहीन इस जर्जर पंचायत भवन मे भयवश कोई नही जाता है !बाहर खुले मे खडा शौचालय मुहं बाए खड़ा है हैण्डपम्प का अता पता ही नही रहा ! ग्रामीणो का यहा तक कहना है कि जब से पंचायत भवन है उस भवन मे दो तीन वर्ष बैठक हुई होगी ! इस सम्बन्ध मे ग्राम प्रधान राममिलन यादव का कहना है कि जर्जर पंचायत भवन को ध्वस्त कराने हेतु

कई बार विभाग द्वारा टीम गठित द्वारा सरवे किया गया लेकिन आज तक कोई कार्यवाही नही की जा सकी!जबकि पंचायत भवन का बनना या रिपेयरिंग कराना नितांत आवश्यक है बरसात के मौसम मे किसी भी समय धराशायी होने से दुर्घटना भी हो सकती है

आवश्यक सूचना

आप सभी पाठक बन्धुओं से अनुरोध है कि आनलाइन समाचार पत्र पढ़नें और ई–पेपर का लाभ लेने हेतु हमारे निम्नांकित वेबसाइट एवं न्यूज पोर्टल - dku live चैनल पर सम्पर्क कर लाभ उठायें– उ0प्र0 के सभी जनपदों एवं तहसीलों से पत्रकार बननें के लिए सम्पर्क करें–

www.Deshkiupasana.com
www.Deshkiupasana.in
www.Deshkiupasana.org

–संपादक

13 जुलाई को आईडियल जॉब प्लेसमेण्ट सर्विस औरंगाबाद महाराष्ट्र एवं पावना इण्डस्ट्रीज अलीगढ़ द्वारा होगा कैम्पस सेलेक्शन

जौनपुर सू.वि. : राजकीय आई0टी0आई0 सिद्दिकपुर जौनपुर के कैम्पस में 13 जुलाई 2022 को आईडियल जॉब प्लेसमेण्ट सर्विस औरंगाबाद महाराष्ट्र एवं पावना इण्डस्ट्रीज अलीगढ़ द्वारा कैम्पस सेलेक्शन किया जा रहा है जिसमें 10 वीं के साथ आई0टी0आई0 (सभी ट्रेड) व गैर तकनीकी अभ्यर्थी जिनकी उम्र 18 से 30 वर्ष हो जिसमें इच्छुक अभ्यर्थी प्रतिभाग कर सकते हैं वे अपने समस्त मूल प्रमाण पत्र, छायाप्रति, फोटो, आधार कार्ड व बायोडाटा बैंक पास बुक इत्यादि के साथ समय प्रातः 10. 00 बजे राजकीय आई0टी0आई0 सिद्दीकपुर, जौनपुर के कैम्पस में उपस्थित होना सुनिश्चित करेंगे। उक्त जानकारी प्रधानाचार्य राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान द्वारा दी गयी।

नवसृजित नगर पंचायतों में पिछड़ी जातियों का कराया गया रैपिड सर्वे –अपर जिलाधिकारी

जौनपुर सू.वि. : अपर जिलाधिकारी/प्रभारी अधिकारी स्थानीय निकाय ने अवगत कराया है कि नवसृजित नगर पंचायतों (गौराबादशाहपुर, कचगांव, रामपुर) में पिछड़ी जातियों का रैपिड सर्वे कराया गया है, जिसका विवरण नगर पंचायत कार्यालय में रखा गया है। अतः सर्व साधारण से अपेक्षा है कि नगर पंचायत कार्यालय में जाकर परिवारों की सूची का परीक्षण कर ले, यदि किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो नगर पंचायत कार्यालय में 10 जुलाई 2022 तक दर्ज करा ले, जिससे आपत्तियों का निस्तारण किया जा सके। इस अवधि में पड़ने वाले सभी सार्वजनिक अवकाश पर भी नगर पंचायत कार्यालय खुले रहेंगे।

01 अप्रैल 2020 के पूर्व का बकाया टैक्स वाले परिवहन यानों का देय पेनाल्टी माफ

जौनपुर सू.वि. : सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी एस पी सिंह ने जनपद के समस्त वाहन स्वामियों को अवगत कराया जाता है कि 01 अप्रैल 2020 के पूर्व का बकाया टैक्स वाले परिवहन यानों पर देय पेनाल्टी से शत–प्रतिशत छूट प्रदान की गयी है। उक्त बकाया कर जमा करने एवं पेनाल्टी माफ करने के उद्देश्य से द्वितीय शनिवार 09 जुलाई 2022 को कार्यालय प्रतिदिन की भॉति खुला रहेगा। वाहन स्वामियों से अपील की जाती है कि एकमुस्त शास्ति समाधान योजना का लाभ उठाये। इस योजना का लाभ मात्र 27 जुलाई 2022 तक लिया जा सकता है।

अमेजन कंपनी में हुआ प्रांजुल मिश्रा का चयन

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। एलडीए कॉलोनी में सेक्टर जी चौराहा के निकट स्थापित शिवांगी मीडिया कम्युनिकेशंस एडवरटाइजिंग एजेंसी के संचालक राम मोहन मिश्रा के पुत्र प्रांजुल मिश्रा का चयन

अमेजन कंपनी में सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट इंजीनियर के पद पर हो गया है प्रांजुल मिश्रा के चयन पर परिजनों, रिश्तेदारों, मीडिया कर्मियों ने खुशी जाहिर की है। प्रांजुल मिश्रा ने एलडीए कॉलोनी स्थित अपने आवास पर एक भेंटवार्ता में बताया कि सालाना पैकेज पचास लाख मिलेगा और बंगलुरु ऑफिस में जाकर कार्य करना होगा। पिता राम मोहन मिश्रा मीडिया कर्मी हैं,कानपुर और लखनऊ में एडवरटाइजिंग एजेंसी है। मीडिया प्रोफेशन में होने के कारण राम मोहन मिश्रा ने प्रांजुल को समय नहीं दे पाया वही मां मधु मिश्रा ने भरपूर समय दिया। प्रांजुल मिश्रा ने बताया कि आज जो कुछ भी हूं, मां के अनुशासन की वजह से ही हूं। माता पिता के त्याग और परिवार के अनुशासन से कुछ बड़ा सोचने की प्रेरणा मिली और स्कूल के टाइम से ही बड़ी कंपनी में बड़े पैकेज पर जाने का सपना था जिसकी शुरुआत हो चुकी है। छोटी बहन शिवांगी मिश्रा का सपना डॉक्टर बनने का है। पूरे मनोयोग से तैयारी में जुटी हुई है।

facebook YouTube WhatsApp twitter Instagram

–सुविचार–

जिंदगी में वहां तक झुको जहां तक संबंधों में लचकता और मन में आत्म–सम्मान बना रहे।

–साभार ज्ञानामृत पत्रिका

सम्पादकीय

धर्मांधता : कट्टरता के दौर में कोई कहीं भी सुरक्षित नहीं

धार्मिक रूप से कट्टरवादी जिस तरह मुस्लिम समुदाय में हैं, उसी तरह हिंदू समुदाय में भी हैं। और समाज में कट्टरवाद बढ़ने से हिंदू–मुसलमान, किसी की भी सुरक्षा की गारंटी नहीं है। ऐसे में, सबसे ज्यादा मुश्किल उदारवादियों को होती है। कट्टरवाद के इस व्यापक दौर में वे कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं।

पिछले दिनों बांग्लादेश के नड़ाइल में मिर्जापुर यूनाइटेड कॉलेज के प्रोफेसर स्वप्न कुमार बसु और एक छात्र को उपस्थित भीड़ ने पुलिस की मौजूदगी में जूते की माला पहनाई। उन दोनों की गलती क्या थी? छात्र की गलती यह थी कि उसने भारत में चल रहे विवाद के बीच भाजपा से निलंबित नूपुर शर्मा का समर्थन किया था। और प्रोफेसर की गलती क्या थी? उनकी गलती यह थी कि जब क्रुद्ध भीड़ उस छात्र को मारने के लिए उसका पीछा कर रही थी, तब प्रोफेसर ने अपने चेंबर में उस छात्र को शरण दी थी।

भीड़ ने कॉलेज कैंपस में ही प्रोफेसर के स्कूटर में आग लगा दी। प्रोफेसर ने पुलिस बुला ली। लेकिन पुलिस के जवानों ने प्रोफेसर और छात्र को सुरक्षा देने के बजाय उन्हें भीड़ के हवाले कर दिया, ताकि उन्हें अपमानित किया जा सके और जूते की माला पहनाई जा सके। नूपुर शर्मा की टिप्पणी पर सिर्फ नड़ाइल नहीं, पूरे बांग्लादेश में कट्टरवादियों ने तांडव मचाया था। उन कट्टरवादियों को संभवतः यह मालूम भी नहीं था कि उनके क्षुब्ध होने की वजह क्या है, आखिर विवादास्पद टिप्पणी में कहा क्या गया था।

वर्षों पहले जब मैंने धर्म पर कुछ कहा था, तब भी बांग्लादेश के कट्टरवादियों ने ऐसा ही तांडव मचाया था। वे भी नहीं जानते थे कि वस्तुतः मैंने कहा क्या था। हंगामा मचाने वालों को यह जानने की जरूरत नहीं होती कि वे किस बात पर हंगामा कर रहे हैं। वे जानना भी नहीं चाहते। उनके सामने सवाल रखने की इजाजत नहीं है। किसी तरह की आलोचना या अध्ययन से भी उनका कोई लेना–देना नहीं है। हद तो यह है कि वे सच भी जानना नहीं चाहते।

ऐसे कट्टरवादियों को जब पता चलता है कि किसी ने उनके ध र्म से जुड़ी कोई बात कही है, तो धार्मिक भावना पर आघात लगने का आरोप लगाते हुए वे सड़कों पर उतर पड़ते हैं और समुदाय विशेष को निशाना बनाने के अपने हिंसक और विध्वंसात्मक अभियान में लग जाते हैं। खासकर मुस्लिम देश जब अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के विरोध में खड़े हैं, तब यह सवाल पैदा होता है कि यह दुनिया क्या मुस्लिमों और गैर मुस्लिमों में विभाजित हो जाएगी।

मैंने यह पाया है कि हाल के कुछ वर्षों में बांग्लादेश में अनेक शिक्षकों पर हमला बोला गया है, जिनमें से ज्यादातर अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय से हैं। ऐसा लगता है कि वहां का बहुसंख्यक समुदाय हिंदुओं को अब शिक्षकों के पद पर नहीं देखना चाहता। हिंदुओं की जमीन और संपत्ति पर पहले ही कब्जा हो चुका है, अब उनको शिक्षकों के सम्माननीय पेशे से हटाने की तैयारी है। स्वप्न कुमार बसु को अपमानित करने के कुछ ही दिन बाद आशुलिया में एक मुस्लिम छात्र ने हिंदू शिक्षक की क्रिकेट के विकेट से पीट–पीटकर हत्या कर दी।

उस शिक्षक का दोष क्या था? उन्होंने एक छात्रा के साथ दुर्व्यवहार के मामले में उस छात्र को डांटा था। चूंकि वह छात्र स्कूल के मालिक का रिश्तेदार बताया जाता है, ऐसे में, मानना मुश्किल है कि उसे अपने अपराध की सख्त सजा मिलेगी। हालांकि हिंदू शिक्षकों को निशाना बनाने के विरोध में बांग्लादेश में कई जगहों पर प्रदर्शन भी हुए हैं, समाज में बढ़ती कट्टरता के खिलाफ आवाज उठाई गई है। लेकिन अच्छी चीजों के बजाय बुरी चीजों का असर और प्रसार ज्यादा होता है।

इसीलिए मानवता के पक्ष में उठी आवाजों की तुलना में सांप्रदायिक विद्वेष और फतवा देने की प्रवृत्ति ही चर्चा में ज्यादा रहेगी। पूरे बांग्लादेश का एक जैसा हाल है। अल्पसंख्यक हिंदू निशाने पर हैं। क्या बांग्लादेश को सौ फीसदी मुस्लिम देश बनाने का लक्ष्य है? यही हाल रहा, तो बांग्लादेश के अफगानिस्तान में बदलने में देर नहीं लगेगी। नाच–गाना, नाटक–सिनेमा सब पर प्रतिबंध लग जाएगा। नारी–विद्वेषी, गणतंत्र–विरोधी और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के दुश्मन पूरे देश पर काबिज हो जाएंगे।

बांग्लादेश में शरिया कानून लागू हो जाएगा। लड़कियों की शिक्षा और नौकरी पर अंकुश लग जाएगा और महिलाओं के लिए बुर्का पहनना अनिवार्य हो जाएगा। नड़ाइल की घटना के कुछ ही दिन बाद भारत में राजस्थान के उदयपुर में एक नृशंस हत्याकांड को अंजाम दिया गया। दो कट्टरवादी मुस्लिमों ने एक हिंदू दर्जी की सिर्फ इसलिए गला काटकर हत्या कर दी कि उसने नूपुर शर्मा का समर्थन किया था। यही नहीं, हत्यारों ने उस हत्याकांड का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर अपलोड भी कर दिया।

भारत में इन दिनों हिंदू–मुस्लिम तनाव बढ़ रहा है। ऐसे माहौल के बीच आईएस की तरह हत्या करने का वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड करने का नतीजा भयंकर हो सकता है, क्या हत्यारे यह नहीं जानते थे? जाहिर है, इसके जरिये भारत में सांप्रदायिक विद्वेष और हिंसा फैलाने की मंशा थी। बेशक उदयपुर की रोंगटे खड़े कर देने वाली घटना की प्रतिक्रिया में हिंसा की वैसी कोई घटना नहीं हुई, लेकिन यह भी सच है कि स्थिति सामान्य होने में लंबा वक्त लगेगा।

यही नहीं, भारत के आम मुसलमानों को लंबे समय तक इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी और हिंदुओं के बीच मुस्लिम विद्वेष बढ़ेगा। अभी जो स्थिति है, वही कम डरावनी नहीं है। पूरे उपमहाद्वीप में कट्टरवादियों की भीड़ जलाओ, मार डालो, गिरफ्तार करो, फांसी दो जैसी मांग कर रही है। धार्मिक भावना पर चोट लगने की बात कहते हुए कट्टरवादी लोग सिर्फ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन ही नहीं कर रहे, बल्कि सामने वाले का अस्तित्व मिटा देने की कोशिश तक में लगे हैं, जो बेहद चिंताजनक है।

धार्मिक रूप से कट्टरवादी जिस तरह मुस्लिम समुदाय में हैं, उसी तरह हिंदू समुदाय में भी हैं। और समाज में कट्टरवाद बढ़ने से हिंदू–मुसलमान, किसी की भी सुरक्षा की गारंटी नहीं है। ऐसे में, सबसे ज्यादा मुश्किल उदारवादियों को होती है। कट्टरवाद के इस व्यापक दौर में वे कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं। सांप्रदायिक घृणा की भावना फैलाने और दंगा–फसाद करने से आम हिंदू–मुसलमानों का कोई भला नहीं होता, इसका फायदा राजनेताओं और राजनीतिक दलों को ही मिलता है। लेकिन विडंबना यह है कि इसके बावजूद आम लोग कोई सबक नहीं सीखते। कट्टर उन्मादियों की भीड़ के आगे विवश और लाचार होना ही शायद इस उपमहाद्वीप के उदार और चिंतनशील लोगों की नियति है।

ये लेखक के अपनें विचार हैं।

कांवर यात्रा से गुजरने वाले मार्गो पर लगाया जायेगा अतिरिक्त पुलिस बल –राजेश द्विवेदी

हरदोई ब्यूरो अम्बरीष कुमार सक्सेना : पुलिस लाइन सभागार में आहूत पीस कमेटी बैठक की अध यक्षता करते हुए जिलाधिकारी अविनाश कुमार ने उपस्थित धर्म गुरूओं, उद्योग व व्यापार संगठन के पदाधिकारी, समाज सेवी एवं सम्भ्रात लोगों से कहा कि बरीद के अलावा अन्य सभी पर्व व त्यौहार को उत्साह, एकता, आपसी भाईचारे एवं जनपद की गंगा जमुनी तहजीब व शान्ति के साथ मनायें। उन्होने कहा कि त्यौहारों पर जनपद में शान्ति बनाये रखने हेतु अपने गांव तथा मोहल्लों में आने वाले प्रत्येक बाहरी व्यक्ति के बारे में जानकारी रखें और संदिग्ध व्यक्ति मालूम होने पर तत्काल पुलिस एवं प्रशासन को सूचना दें। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी त्यौहारों पर प्रशासन एवं पुलिस द्वारा शान्ति व्यवस्था पर पूरी नजर रहेगी और संवेदनशील स्थानों पर भारी पुलिस बल तैनात रहेगा तथा किसी तरह की अफवाह फैलाने एवं शान्ति भंग करने का प्रयास करने वाले लोगों पर कड़ी कार्यवाही की जायेगी। जिलाधिकारी ने कहा कि बरीद पर व्यापक सफाई व्यवस्था रहेगी और पेयजल एवं विद्युत सप्लाई नियमित कराई जायेगी। उन्होने कांवड़ यात्रा के सदस्यों से कहा कि मा0 मुख्यमंत्री जी के निर्देशानुसार कोई भी कावंड़ यात्रा उप जिलाधिकारी की अनुमति के बाद ही निकाले और कांवड़ यात्रा परम्परागत मार्गो से निकाली जायेगीं तथा कोई नयी परम्परा नही की जायेग साथ ही डीजे पर निर्धारित आवाज में केवल भक्ति गीत ही बजाये जायेगें। जिलाधिकारी ने उपस्थित पीस कमेटी के सदस्यों से कहा कि अपने माध्यम से क्षेत्र के लोगों बताये कि विगत वर्ष जो लोग कोरोना से गंभीर रूप से बीमार हो चुके है वह कांवड़ यात्रा न करें और आस्था प्रकट करने के लिए पास मंदिर में ही पूजा पाठ करें। उन्होने उपस्थित सदस्यों से अपील करते हुए कहा कि सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करने के लिए लोगों

को जागरूक करें और बताये कि इससे गंदगी होने के साथ ही नाली–नालों में फस जाने से जल निकासी में अवरोध होने से जल भराव की स्थिति उत्पन्न होती है। जिलाधिकारी ने कहा कि बकरीद पर सफाई, पेयजल एवं विद्युत सप्लाई की समस्या होने पर संबंधित ईओ को फोन करें। उन्होने कहा कि कांवड़ यात्रा के मार्गो का निरीक्षण कराया जा रहा है और खराब सड़कों को ठीक कराया जायेगा और कांवड़ यात्रा मार्गो पर कांवड़ यात्रियों को ठहरने हेतु शिविर लगाने के साथ पेयजल आदि की व्यवस्था भी करायी जायेगीं। बैठक में पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने कहा कि जनपद में पर्व एवं त्यौहारों के साथ कांवर यात्रा को ध्यान में रखते हुए सभी थानाध्यक्षों को निर्देशित किया गया है कि शहर के मोहल्लों एवं गांव के मजरों में बीट सिपाहियों की गस्त बढ़ायें और लोगों से समन्वय बनाकर क्षेत्र की गतिविधियों की जानकारी भी रखें। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि कांवर यात्रा से गुजरने वाले मार्गो पर अतिरिक्त पुलिस बल लगाया जायेगा ताकि कांवड़ियों को किसी प्रकार की दिक्कत न हो और कांवर यात्रा जनपद से सुरक्षित निकल जाये। उन्होने कहा कि अपने क्षेत्र के आसामाजिक तत्वों से सावधान रहे और किसी तरह की आफवाह पर ध्यान न दें तथा मोबाइल आदि के माध्यम से अफवाह फैलाने वाले की जानकारी तत्काल पुलिस तथा प्रशासन का उच्चाधिकारियों को दें। बैठक में अपर जिलाधिकारी वन्दना त्रिवेदी, अपर पुलिस अधीक्षक पूर्वी व पश्चिमी उपस्थित रहें।

अधिवक्ताओं का सम्मान समारोह कार्यक्रम सम्पन्न

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) अखिल भारतीय चाणक्य परिषद के द्वारा आज बड़े उल्लास पूर्ण वातावरण में बार एसोसिएशन बीकापुर में नव निर्वाचित विप्र अधिवक्ताओं का सम्मान किया गया । सम्मान समारोह का आयोजन बीकापुर नगर के बजरंग सरस्वती शिशु मंदिर के प्रांगण में भारी संख्या में उपस्थित परिषद के पदाधिकारियों व विशिष्ट जनों की उपस्थिति में किया गया । समारोह का शुभारंभ भगवान परशुराम के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया । सम्मानित अधिवक्ताओं में नव निर्वाचित अध्यक्ष राम संजीवन पांडेय, वरिष्ठ उपाध्यक्ष घनश्याम द्विवेदी, मंत्री श्रीकांत तिवारी,आडीटर ब्रह्मानंद मिश्रा, संयुक्त मंत्री राजेन्द्र कुमार तिवारी, वरिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य सदानंद पाठक, कनिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य बृजेश तिवारी,संजय पांडेय,दिनेश कुमार पांडेय की उपस्थिति उल्लेखनीय रही जिन्हें परिषद के वरिष्ठ पदाधिकारियों व विशिष्ट जनों द्वारा माल्यार्पण व भगवान परशुराम जी का चित्र तथा चाणक्य धारा भेंट कर सम्मानित किया गया ।परिषद के राष्ट्रीय संरक्षक पं०राम अनुज तिवारी, राष्ट्रीय महामंत्री आचार्य राधेश्याम मिश्रा, व्यास पीठाधीश्वर पंडित अमर नाथ पाण्डेय,पं० दिलीप राम त्रिपाठी,पं० रमाकांत द्विवेदी, राष्ट्रीय संगठन मंत्री विनय पांडेय, वरिष्ठ राष्ट्रीय सदस्य पं० जय प्रकाश तिवारी, ब्लाक संगठन मंत्री गोमती तिवारी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अरुण कुमार तिवारी, जिला अध्यक्ष पं० राकेश पाठक, उपाध्यक्ष राकेश मिश्रा, ग्राम समिति तोरोमाफी अध्यक्ष पं० शिव प्रसाद उपाध्याय, मंत्री ऋषि कुमार पांडेय, अरस दुबे, राधेश्याम उपाध्याय, ग्राम समिति मानापुर अध्यक्ष राजेन्द्र उपाध्याय, भीखीसराय अध्यक्ष पं० राम देव पांडेय, भावापुर अध्यक्ष रवींद्र दूबे,नगर अध्यक्ष पं० बजरंग उपाध याय,पं० राज कुमार पांडेय,पं० दिनेश तिवारी ने नव निर्वाचित अधिवक्ताओं को सम्मानित करते हुए उन्हें अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन करने हेतु भगवान परशुराम से मंगल कामना की । इस अवसर पर नव निर्वाचित अध्यक्ष पंडित राम सजीवन पांडेय ने कार्यकारिणी की तरफ से सम्मान समारोह के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए रचनात्मक कार्यों में परिषद को पूर्ण सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया गया । समारोह का संचालन व धन्यवाद ज्ञापन ब्लाक अध्यक्ष पं०मानस तिवारी द्वारा किया गया ।अंत में शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

अखिलेश को अब मेरी जरूरत नहीं : राजभर के बदले सुर सपा के लिए खड़ी करेंगे मुसीबत?

लखनऊ ब्यूरो : सपा और सुभासपा(सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी) का मनमुटाव अब सामने आ गया है। सियासी गलियारों में अपने बेबाक अंदाज के लिए प्रसिद्ध ओम प्रकाश राजभर ने अखिलेश यादव पर तंज कसा है। इसके साथ ही उनके बयान के सियासी गलियारों में कई अर्थ निकाले जा रहे हैं। सपा और सुभासपा के बीच चल रही आंतरिक रार अब दीवार बनती नजर आ रही है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण बृहस्पतिवार को देखने को मिला। लखनऊ में सुभासपा के विधायक मौजूद थे, लेकिन वे सपा कार्यालय में आयोजित बैठक में नहीं पहुंचे। जबकि जयंत चौधरी रालोद विधायकों को लेकर खुद पहुचे थे। राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार यशवंत सिन्हा के लखनऊ आने पर सपा कार्यालय में विधायकों की बैठक बुलाई गई। सूत्र बताते हैं कि सपा कार्यालय से सुभासपा और रालोद के शीर्ष नेतृत्व को भी बैठक में आने के लिए कहा गया, लेकिन बाद में सुभासपा को बताया गया कि अभी बैठक तय नहीं है। फिर भी सुभासपा के सभी विधायकों को लखनऊ बुला लिया गया। वे लखनऊ में पहुंच कर बैठक में बुलावे आने का इंतजार करते रहे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इससे सुभासपा की नाराजगी बढ़ गई है।सूत्र बताते हैं कि इससे गठबंधन के बीच दीवार खड़ी हो गई है। सपा भी मनाने के मूड में नहीं दिख रही है। इस संबंध में पूछे जाने पर सपा प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी ने खुद के प्रदेश से बाहर होने की बात कहने के साथ ही इस मामले में जानकारी होने से इनकार किया। लंबे समय से चल रहा है मनमुटाव सपा और सुभासपा के बीच मनमुटाव विधान परिषद चुनाव को लेकर ही दिखने लगा था। सुभासपा अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर चाहते

थे कि विधान परिषद की चार सीटों में कम से कम एक सीट उन्हें मिले, जिससे उनका बेटा सदन में पहुंच सके। लेकिन अखिलेश यादव ने इनकार कर दिया। इससे आहत राजभर ने भी तंज कसते हुए कहा कि 34 सीट पर चुनाव लड़कर आठ जीतने वाले को राज्यसभा का इनाम मिला और 14 सीट लेकर छह जीतने वाले की अनदेखी क्यों? आजमगढ़ और रामपुर लोकसभा उपचुनाव हारने के बाद राजभर ने अखिलेश पर टिप्पणी करते हुए कहा कि वह आजमगढ़ गए होते तो चुनाव जीत जाते। हम लोग धूप में प्रचार कर रहे थे और वे एसी में बैठे रहे। इस पर बुधवार को अखिलेश ने कहा कि सपा को किसी की सलाह की जरूरत नहीं है। कई बार राजनीति पर्दे के पीछे से चलती है। अखिलेश को हमारी नहीं जयंत की जरूरत मुझे बुलाया नहीं गया था। सपा अध यक्ष को जयंत चौधरी की जरूरत है। अब मेरी जरूरत नहीं है। राष्ट्रपति चुनाव पर कल के बाद फैसला लेंगे।

आयुष्मान कार्ड बनाने हेतु पंचायत सहायकों को किया गया प्रशिक्षित

हरदोई(अम्बरीष कुमार सक्सेना)विकास खंड सभागार शाहाबाद में प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत आयुष्मान पखवाड़ा में आयुष्मान कार्ड बनाने हेतु पंचायत सहायकों को प्रशिक्षण दिया गया इसमें यह बताया गया कि जिस व्यक्ति का अंत्योदय कार्ड बना है इस व्यक्ति के कार्ड में जो भी सदस्य है उन सभी का आयशमान कार्ड बनेगा,जिसका कार्ड बनेगा वह खुद उपस्थित रहेगा एवम उसका आधार कार्ड ब राशन कार्ड होना आवश्यक है इस कार्ड के द्वारा व्यक्ति पूरे साल में 5लाख लाख का खर्च अपनी बीमारी पर सकता है।यह भी अवगत कराया गया है कि प्रत्येक गांव में कोटेदार कार्यालय या राशन वितरण स्थल पर आयुष्मान कार्ड बनाया जाएगा कैंप से पहले आशा कार्यकर्ती द्वारा इसकी सूचना ग्रामीणों को दी जाएगी और आशा बताएगी कि आयुष्मान कार्ड बनवाने के लिए आधार कार्ड राशन कार्ड कैंप में ले जाना अनिवार्य है और जिस व्यक्ति का कार्ड बनना है उसका भी कैंप में रहना आवश्यक है आयुष्मान कार्ड का कोई शुल्क नहीं है

लाभार्थियों की सूची के आधार पर गांव में पहुंचकर स्वास्थ्य कर्मी आयुष्मान कार्ड बनाने का काम करेंगे। इस कार्यक्रम में खंड विकास अधिकारी,शाहाबाद,बृजेश कुमार मिश्र एवं अधीक्षक सी एस सी शाहाबाद मार्कण्डेय प्रताप जायसवाल,मास्टर ट्रेनर वैभव शुक्ला,सहयोगी नीरज राजपूत,नितांत रस्तोगी एडीओ पी, सचिव अनिल कुमार, रामचरन एवं समस्त पंचायत सहायक उपस्थित रहे।

डिवाइडर से टकराई एम्बुलेंस : 5 जख्मी

हरदोई ब्यूरो अम्बरीष कुमार सक्सेना : मरीज को इलाज के लिए लखनऊ ले जा रही एम्बुलेंस–108 शहर की लखनऊ चुंगी पर डिवाइडर से जा टकराई। इस हादसे में एम्बुलेंस पर सवार मरीज और उसके तीमारदार जख्मी हो गए। जिन्हे आनन–फानन में हरदोई मेडिकल कालेज लाया गया। जहां से उन्हें लखनऊ भेजा गया है। बताते हैं कि यहां मेडिकल कालेज में भर्ती मरीज को लखनऊ के लिए रिफर किया गया। जिसे एम्बुलेंस–108 से ले जाया जा रहा था। इसी बीच एम्बुलेंस शहर की लखनऊ चुंगी पर डिवाइडर से जा टकराई। हादसा होने से वहां हड़कंप मच गया। तमाम लोग दौड़ पड़े। जख्मी हुए लोगों को एम्बुलेंस से निकाल कर उन्हें हरदोई मेडिकल कालेज पहुंचाया गया। जहां डाक्टरों ने उनकी हालत नाजुक होती देख तुरंत लखनऊ के लिए रिफर कर दिया है। इस बारे में लोगों का कहना है कि लापरवाही के चलते आड़े–तिरछे रखे गए डिवाइडर हादसे का सबब बनते जा रहे हैं। इससे पहले भी इसी तरह हादसे हो चुके है, लेकिन प्रशासन के अलावा यातायात पुलिस इस तरफ कोई ध्यान नहीं दे रही है।

बर्खास्त जालसाज शिक्षक के खिलाफ दर्ज हुई रिपोर्ट : जांच शुरू

हरदोई ब्यूरो अम्बरीष कुमार सक्सेना : शिक्षक भर्ती में फर्जीवाड़ा किए जाने से महकमें में हड़कंप मचा हुआ है। इसी के चलते जालसाजी और दस्तावेजो में हेरा–फेरी करने वाले बर्खास्त शिक्षक के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। बीईओ बावन संजीव कुमार भारती की तहरीर पर दर्ज की गई रिपोर्ट की जांच की जा रही है। कपूरपुर बहोरन पोस्ट टोंडरपुर निवासी ब्रजेंद्र पाल पुत्र रामचंद्र पाल ने दस्तावेजो में हेरा–फेरी और जालसाजी करते हुए 2011 में बेसिक शिक्षा विभाग में नौकरी हासिल कर ली थी। ब्रजेंद्र पाल प्रधानाध्यापक प्राथमिक विद्यालय यासीनपुर ब्लाक बावन में तैनात था। जांच में पाया गया कि ब्रजेंद्र पाल ने अपने बीए और बीएड के दस्तावेजों में जालसाजी और हेरा–फेरी की थी। शिक्षक भर्ती में इस तरह किए गए फर्जीवाड़ा का खुलासा होने से महकमें में हड़कंप मच गया। शासन ने इस पर सख्त उठाया। जिसके चलते बीएसए ने प्रधानाध्यापक ब्रजेंद्र पाल को बर्खास्त कर दिया था। इसके बाद सारा मामला एसटीएफ के हवाले कर दिया गया। बीईओ बावन संजीव कुमार भारती ने कोतवाली शहर में दी तहरीर में कहा है कि की गई जांच में सारे आरोप सही साबित हुए। इस तहरीर पर पुलिस ने ब्रजेंद्र पाल के खिलाफ धारा 419/420/467/468 व धारा 471 के तहत रिपोर्ट दर्ज करते हुए जांच शुरू कर दी है।

ज्ञानवापी परिसर हिंदुओं को सौंपने समेत तीन याचिकाओं पर सुनवाई अब 14 को : वादी ने कोर्ट में दिया संसोधित प्रार्थना पत्र

वाराणसी ब्यूरो : वाराणसी के ज्ञानवापी मस्जिद परिसर में शिवलिंग मिलने के दावे के बाद उसमें मुस्लिमों का प्रवेश रोकने समेत अन्य मांगों लेकर दायर याचिका की सुनवाई आज फास्टट्रैक कोर्ट में हुई। मामले की सुनवाई अब 14 जुलाई को होगी। किरण सिंह की याचिका पर फास्ट ट्रैक कोर्ट (महेंद्र कुमार पांडेय की अदालत) में इस मामले को लेकर अंजुमन इंतजामिया मसाजिद कमेटी और अन्य विपक्षी हाजिर हुए। वादी किरन सिंह की तरफ से वाद में संसोधित प्रार्थना पत्र कोर्ट में दिया गया। जिसकी प्रति मुस्लिम पक्ष को आपत्ति दाखिल करने के लिए उपलब्ध कराई गई। जिसके बाद कोर्ट ने सिविल जज फास्ट ट्रैक कोर्ट महेंद्र कुमार पांडेय की अदालत ने सुनवाई के लिए अगली तिथि 14 जुलाई निर्धारित की। सिविल जज सीनियर डिवीजन की अदालत में दायर इस इस वाद को जिला जज डॉ. अजय कृष्ण विश्वेश ने फास्ट ट्रैक कोर्ट (महेंद्र कुमार पांडेय की अदालत) में ट्रांसफर किया था। इन तीन मांगों पर सुनवाई विश्व वैदिक सनातन संघ की अंतरराष्ट्रीय महामंत्री गोंडा निवासी किरन सिंह व दो अन्य ने यह याचिका दाखिल की है। इसमें यूपी सरकार, जिलाधिकारी,

पुलिस आयुक्त, अंजुमन इंतजामिया मसाजिद कमेटी और विश्वनाथ मंदिर ट्रस्ट को पक्षकार बनाया गया है। याचिका में तीन बिंदुओं पर कोर्ट से मांग की गई है, जिसमें परिसर में मुस्लिम पक्ष का प्रवेश रोकने, ज्ञानवापी परिसर हिंदू पक्ष को सौंपने और वादी गण को ज्ञानवापी में तत्काल प्रभाव से पूजा पाठ राग भोग दर्शन शामिल है। याचिका में शिवलिंग पाए जाने के दावे के बाद अवैधानिक गुंबद को हटाकर पूजा पाठ के अधिकार की बात कही गई है। ज्ञानवापी परिसर हिंदू पक्ष को सौंपने और वादी गण को ज्ञानवापी में तत्काल प्रभाव से पूजा–पाठ, राग भोग दर्शन की मांग की गई है।

बच्चों का बौद्धिक मूल्याकंन कर उन्हे 04 समूहों में बांटकर उपलब्ध करायी जा रही गुणवत्तापरक शिक्षा

हरदोई(अम्बरीष कुमार सक्सेना) : आज महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित रद्धेपुरवा रोड अवस्थित राजकीय संम्प्रेक्षण गृह (किशोर) हरदोई में निरूद्ध किशोरों को, जो जाने अनजानें अपराध की ओर उन्मुख हो गये थे, उन्हे रोजगारोन्मुख करने के उद्धेश्य से उ0प्र0 कौशल विकास मिशन योजनान्तर्गत निःशुक्ल प्रशिक्षण की शुरूआत की गयी। राजकीय संप्रेक्षण गृह में अवस्थित इस प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन जिलाधिकारी एवं मुख्य विकास अधिकारी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। उल्लेखनीय है कि जिलाधिकारी के नेतृत्व में प्रशासन द्वारा भारत सरकार एवं कौशल विकास मिशन मुख्यालय से निरंतर प्रयास कर इस प्रशिक्षण हेतु मान्यता प्राप्त की गयी है, जिसके क्रम में पूरे प्रदेश में सर्वप्रथम राजकीय संप्रेक्षण गृह हरदोई में प्रशिक्षण कार्य प्रारंभ किया गया। मिशन मुख्यालय, लखनऊ से कुल 61 प्रशिक्षुओं को पावर लाइन डिस्ट्रीब्यूशन एवं सॉफ्ट कम्प्यूटर स्किल में प्रशिक्षित किये जाने हेतु लक्ष्य आवंटित किया गया है, जिसके क्रम में 20 किशोरों के प्रथम बैच के प्रशिक्षार्थियों का चयन कर प्रशिक्षित किया जा रहा है। प्रशिक्षण समाप्त होने के उपरान्त मूल्यांकन के पश्चात इन प्रशिक्षुओं को प्रमाण–पत्र एवं प्री प्लेसमेंट कराकर उन्हे समाज की मुख्यधारा में पुर्नवासित कराया जायेगा। उल्लेखनीय है कि राजकीय सम्प्रेक्षण गृह (किशोर) में पूर्व से ही माध्यमिक एवं बेसिक शिक्षा के अध्यापकों द्वारा बच्चों का बौद्धिक मूल्याकंन कर उन्हे 04 समूहों में बांटकर गुणवत्तापरक शिक्षा उपलब्ध करायी जा रही है। इस अवसर पर जिलाधिकारी द्वारा थ्योरी कक्ष, लैब कक्ष एवं कम्प्यूटर कक्ष का निरीक्षण किया गया साथ ही संस्था के बच्चों से वार्त्ता कर उन्हे मनोयोग से प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु अभिप्रेरित किया गया। कार्यक्रम के समापन पर जिलाधिकारी एवं मुख्य विकास अधिकारी द्वारा राजकीय सम्प्रेक्षण गृह परिसर में पौधरोपण कर पर्यावरण के प्रति बालकों की जागरूकता हेतु संदेश भी दिया गया। कार्यक्रम में उ0प्र0 कौशल विकास मिशन योजनान्तर्गत जनपद स्तर पर तैनात जिला प्रबन्धक निर्मल किशोर मिश्र, जिला प्रोबेशन अधिकारी सुशील कुमार सिंह एवं प्रशिक्षण प्रदान करने वाली कार्यदायी संस्था के प्रतिनिधि रिजवान खॉ, ऋषि पाल, केन्द्र प्रबन्धक मनमोहन सिंह यादव, प्रशिक्षक श्रेय द्विवेदी आदि उपस्थित रहें।

जनपद में बन्धुत्व एकता सौहार्द प्रेम बनाये रखने हेतु शांति समिति की बैठक संपन्न

जौनपुर सू.वि. : जनपद में बन्धुत्व, एकता, सौहार्द, प्रेम बनाये रखने के लिए जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में धार्मिक गुरुओं, समाजसेवी संगठनों, व्यापार मंडल के पदाधिकारियों के साथ आगामी त्यौहार बकरीद, श्रावण माह एवं अन्य त्यौहार के दृष्टिगत शांति समिति की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न हुई। जिलाधिकारी ने उपस्थित समस्त लोगो से कहा कि आगामी त्यौहार चन्द्र दर्शन के अनुसार ईदुज्जुहा (बकरीद) 10 जुलाई 2022, श्रावण मास 14 जुलाई 2022 से एवं शिवरात्रि 26 जुलाई 2022, हरियाली अमावस्या 28 जुलाई, हरियाली तीज 31 जुलाई, नाग पंचमी 02 अगस्त 2022, मोहर्रम 09 अगस्त 2022 एवं 12 अगस्त को रक्षा बन्धन का पर्व सम्पन्न कराने की जिम्मेदारी हम सबकी है। उन्होंने कहा कि त्यौहार के दृष्टिगत जनपद में समस्त थानावार मजिस्ट्रेटों को तैनात किया गया है, थानों पर शान्ति समिति की बैठकें की गयी है। उन्होंने समस्त तैनात मजिस्ट्रेटों को निर्देशित किया है कि प्रत्येक स्थिति में व्यवहार कुशलता, दृढ़ता, धैर्य एवं दूरदर्शिता से काम करेंगे, प्रत्येक स्थिति में अपने कुशल नेतृत्व में शांति व्यवस्था बनाये रखेंगे। किसी भी विषम परिस्थिति में सूचना पुलिस अधीक्षक तथा मजिस्ट्रेट को त्वरिततम साधनों से उपलब्ध कराई जाये। जिलाधिकारी ने अधिशासी अधिकारी को निर्देशित किया कि नगरीय क्षेत्र में ईदगाह की सफाई, पेयजल, प्रकाश आदि की प्रबंध कराना सुनिश्चित किया जाये। अधिशासी अभियंता पीडब्ल्यूडी को निर्देशित किया कि जो सड़कों में गड्ढे हो उन्हें तत्काल भर दिया जाए। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 लक्ष्मी सिंह को निर्देशित किया कि समस्त सीएचसीध्पीएचसी पर एन्टी रेबीज एवं साप काटने की सुई उपलब्ध रहे। अधी0 अभियन्ता विद्युत को निर्देशित किया कि त्यौहारों के दौरान विद्युत आपूर्ति बनी रहे, ट्रास्फार्मर एवं तार ठीक करा लिया जाये। उन्होंने ए0आर0टी0ओ0 को रुट डायवर्जन एवं डाग्गामार पर कार्यवाही करने के निर्देश दिये। जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देशित किया कि ग्रामीण क्षेत्र के शिवालय, मस्जिदों पर साफ–सफाई के कार्य कराये। नमाज के समय मस्जिदों एवं शिवभक्तों द्वारा मन्दिरों पर जलाभिषेक के समय आवागमन के मार्गों पर किसी भी जानवारों का विचरण कदापि न होने पाये। उन्होंने कहा कि शस्त्र प्रर्दशन की अनुमति नही है। अगर सोशल मीडिया पर कोई प्रतिबंधित और आपत्तिजनक संदेश प्राप्त होता है तो प्रशासन को अवगत कराएं, पहचान सुनिश्चित करने के उपरांत सोशल मीडिया का दुरुपयोग करने वालों के खिलाफ विधिसंवत कार्रवाई की जाएगी, अगर प्रतिबंधित संगठन की सक्रियता के बारे में पता चलता है तो अविलंब अवगत कराएं, जिससे प्रशासन उनके खिलाफ कार्रवाई करें। उन्होंने कहा कि कानून सभी के लिए एक समान है अगर किसी भी व्यक्ति के द्वारा किसी के धर्म को ठेस पहुंचाया जाता है तो संबंधित के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। जिलाधिकारी ने सभी से अपील की है कि संविधान संगत व्यवहार करते हुए लोकतंत्र को मजबूत करने में जनपद के समस्त लोग सहयोग करें और विश्व के बड़े लोकतांत्रिक देश होने के कारण हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है कि इसको मजबूत बनाते हुए संपूर्ण विश्व को एकता का पाठ पढ़ाएं। अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण शैलेंद्र सिंह द्वारा कहा गया कि पूर्व में जैसे त्यौहार मनाया जा रहा था वैसे ही त्यौहार मनाया जायेगा, किसी भी प्रकार की नई परम्परा नही शुरु की जायेगी। और प्रतिबंधित पशुओ की कुर्बानी नही की जायेगी। उन्होंने कहा कि पुलिस विभाग द्वारा सोशल मीडिया पर पोस्ट करने वालो की निगरानी की जा रही है। किसी भी प्रकार का भ्रामक खबरों को फैलाने वालों के खिलाफ कठोर कार्यवाही की जायेगी और सोशल मीडिया पर भ्रामक खबरों के संबंध में अगर कोई ममला संज्ञान में आये तो तुरन्त प्रशासन से संवाद स्थापित करें, पुलिस प्रशासन द्वारा तत्काल समस्या का निदान किया जायेगा। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी भू–राजस्व रजनीश राय, अपर जिलाधिकारी वि0रा0 रामप्रकाश, समिति के सदस्य और व्यापार मण्डल के सदस्यगण उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी द्वारा कर–करेत्तर एवं राजस्व वसूली की समीक्षा बैठक संपन्न

जौनपुर सू.वि. : जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में कर–करेत्तर एवं राजस्व वसूली की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी के द्वारा विभागवार वसूली की समीक्षा की गई। स्टांप एवं रजिस्ट्रेशन में जनपद को मंडल प्रथम स्थान प्राप्त है, जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि स्टांप के मामलों में आरसी की वसूली की जाए। उन्होंने 10 बड़े बकायेदारों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिया कि जिन लोगों ने पैसे जमा कर दिए हैं उनका नाम हटाकर नए लोगों का नाम दर्ज किया जाए। वाणिज्य कर, आबकारी व स्टाम्प में आर0सी0 मानक के अनुरूप नहीं मिली जिसे बढ़ाने के निर्देश जिलाधिकारी के द्वारा दिए गए। उन्होंने समस्त अधिशासी अधिकारियों को निर्देश दिया कि नगर पालिकाध्नगर पंचायत में बकायेदारों की सूची बनाए और सार्वजनिक स्थानों पर चस्पा, मुनादी करवाएं। उन्होंने सभी से कहा कि क्रमिक लक्ष्य को शत–प्रतिशत प्राप्त करें अन्यथा कार्यवाही की जाएगी। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी भू–राजस्व रजनीश राय, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व रामप्रकाश, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट हिमांशु नागपाल, समस्त उप जिलाधिकारी एवं तहसीलदार सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

किसान सम्मान निधि के लिए ई–केवाईसी जरूरी

जौनपुर सू.वि. : प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत अगली किस्त का इंतजार कर रहे लाखों किसानों के लिए बड़ी खबर है, इस योजना के तहत सरकार ने अभी तक 11 किस्त के पैसे किसानों के खाते में भेज दिए हैं, अगली किस्त पाने के लिए योजना के लाभार्थियों को ई–केवाईसी कराना अनिवार्य कर दिया गया है। ई–केवाईसी के लिए कृषक ऑनलाइन केंद्रों, जन सुविधा केंद्रों (सीएससी) के माध्यम से भी ई–केवाईसी करा सकते हैं। 31 जूलाई तक ई–केवाईसी की प्रक्रिया पूरी न कराने वाले किसानों की अगली किस्त रुक जाएगी। अपर जिला कृषि अधिकारी डा0 रमेश चंद्र यादव ने बताया कि जिले में कुल 738241 कृषको में से अभी तक कुल 491278 कृषको द्वारा ई–केवाईसी कराया गया है। किन्तु अभी तक 246963 कृषको ने अपना ई–केवाईसी नही कराया है। उन्होंने बताया कि ई–केवाईसी कराने के लिए आधार सेवा केंद्र/सीएससी केंद्र पर जाना होगा वहां से बायोमैट्रिक द्वारा ई–केवाईसी कर दिया जाएगा। उन्होंने जनपद के प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के सभी लाभार्थी किसानों से अपील किया है कि 31 जुलाई तक अनिवार्य रूप से अपना ई–केवाईसी करा लें अन्यथा अगली किस्त नहीं प्राप्त हो सकेगी।

जैविक खाद तैयार कर कमाए मुनाफा

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : कृषि विज्ञान केन्द्र बक्शा पर पांच दिवसीय जैविक खाद उत्पादन विधि पर जनपद के 25 किसानों प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण के अंतिम दिन शुक्रवार को केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. सुरेश कुमार कनौजिया ने अपने संबोधन में वर्मी कंपोस्ट खाद तैयार कर किसानों को बाजारीकरण करने पर जोर दिया। उन्होंने सलाह दिया कि जैविक खाद तैयार कर मुनाफा कमा सकते हैं। वैज्ञानिक डॉक्टर सुरेंद्र प्रताप सोनकर ने जैविक खाद बनाने की विधि का विस्तार से जानकारी दी। डॉ. राजीव कुमार सिंह ने जैविक खाद बनाने में लगने वाली सामग्रियों पर विस्तार से चर्चा की। प्रशिक्षण में डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. हरिओम वर्मा, डॉ. ममता आर्या, क्षेत्र प्रबंधक अमित कुमार सिंह, डॉक्टर अनिल कुमार आदि लोग उपस्थित रहे। प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किया गया।

रास्ता के विवाद को लेकर दो पक्षो में चली कुल्हाड़ी : चार लोगों को आई चोट

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : बरसठी थाना क्षेत्र के लखराव गांव में रास्ते के विवाद को लेकर शुक्रवार को कुल्हाड़ी से मारपीट में महिलाओं समेत चार लोगों को चोटें आई है।पुलिस ईलाज के लिये सीएचसी भेजा जहाँ बेहतर ईलाज के लिए चिकित्सकों ने दो को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। लखराव गांव में रास्ते को लेकर संदीप पटेल और सुरेंद्र पटेल के बीच विवाद चल रहा था।रास्ते को सुरेंद्र बंद कर दिए जिसको लेकर संदीप से विवाद हो गया और मामला मारपीट में बदल गया।आरोप है सुरेंद्र पटेल पक्ष के आधा दर्जन लोग लाठी डंडे और कुल्हाड़ी से हमला कर दिए। जिसमे एक पक्ष के संदीप ,मोहन और ईशा के सर और हाथ मे काफी चोट लग गई ।लहूलुहान हाल में तीनों को पुलिस ने सीएचसी भेजा।जहाँ संदीप और मोहन को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। वही दूसरी तरफ जमुनीपुर गांव में जमीन को लेकर गांव के एक दबंग व्यक्ति ने बीनू शुक्ला की लाठी डंडे से पिटाई में घायल हो गई पुलिस ईलाज के लिए सीएचसी भेजा है।इस संदर्भ में थानाध्यक्ष दिनेश कुमार ने बताया दोनों मामले की जानकारी हैं तहरीर के आधार पर विधिक कार्रवाई की जायेगी।

डीसीएम ने पीछे से टैंकर में मारी टक्कर : घायल चालक की इलाज के दौरान मौत

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : चंदवक थाना क्षेत्र के वाराणसी आजमगढ़ मार्ग पर कर्रा कॉलेज के पास ब्रेकर पर गुरुवार आधी रात डीसीएम ने टैंकर में पीछे से जोरदार टक्कर मार दी जिससे डीसीएम चालक गंभीर रूप से घायल हो गया।उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र डोभी ले जाया गया जहां हालत गंभीर देख डॉक्टरों ने ट्रॉमा सेंटर रेफर कर दिया।इलाज के दौरान शुक्रवार दोपहर में उसकी मौत हो गई।पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। आजमगढ़ जनपद के देवगांव कोतवाली के भुईली गांव निवासी शम्भू साजन यादव(35)पुत्र भरत यादव डीसीएम वाहन को लेकर वाराणसी जा रहा था।वह कर्रा कॉलेज के पास आधीरात पहुंचा ही था कि ब्रेकर देख एकाएक आगे जा रहा ट्रैंकर रुक गया जिससे पीछे से जोरदार टक्कर हो गईं।डीसीएम चालक शम्भू बुरी तरह जख्मी हो गया।सूचना पर पहुंची पुलिस उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र डोभी ले गई जहां हालत गंभीर देख डॉक्टरों ने रेफर कर दिया जहां इलाज के दौरान दोपहर में मौत हो गईं।पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज कर आवश्यक कार्रवाई कर रही है।

गैर इरादतन हत्या का वांछित आरोपी गिरफ्तार

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : थाना क्षेत्र के बांकी बथुआ गाँव मे गत दिनों हुई मारपीट में एक बुजुर्ग की इलाज के दौरान मौत हो गई थी।स्थानीय पुलिस मुकदमा दर्ज कर वांच्छित आरोपियों की तलाश में दबिश दे रही थी। शुक्रवार को थानाध्यक्ष विवेक तिवारी हमराहियों के साथ अवैध वाहनो की चेकिंग तथा वांच्छित आरोपियों की तलाश में क्षेत्र में भ्रमण पर थे।मुखबिर की सूचना पर गुदरीगंज चौराहे से प्रवीण कुमार गौतम उर्फ नन्हकू निवासी बाकी बथुआ को गिरफ्तार कर लिया। नाम पता तस्दीक कर आरोपी को न्यायिक अभिरक्षा रिमांड हेतु न्यायालय पेश कर दिया गया।

थाना चन्दवक पुलिस द्वारा चोरी का सफल अनावरण करते हुए दो शातिर चोरों को किया गिरफ्तार : चोरी का समरसेबल बरामद

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जौनपुर के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक नगर एवं क्षेत्राधिकारी नगर के निकट पर्यवेक्षण में तलाश वांछित/पुरस्कार घोषित अपराधियों की गिरफ्तारी के अभियान के क्रम में कार्यवाही करते हुए दि0 07.07.2022 को थाना चन्दवक पुलिस द्वारा मु0अ0सं0 112/22 धारा 379/411 भा0द0वि0 थाना चंदवक का सफल अनावरण करते हुए मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त 1. सागर राजभर पुत्र पंचम राजभर निवासी मुर्खा थाना चन्दवक जनपद जौनपुर 2. विकास कन्नौजिया पुत्र छविराज कन्नौजिया निवासी कबूलपुर थाना जफराबाद जनपद जौनपुर हालपता मुर्खा थाना चन्दवक जनपद जौनपुर को एक अदद चोरी की समर सेबिल मोटर के साथ समय सुबह 10.05 बजे ग्राम अईलिया डीह बाबा के पास से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्तगण– 1. सागर राजभर पुत्र पंचम राजभर निवासी मुर्खा थाना चन्दवक जनपद जौनपुर 2. विकास कन्नौजिया पुत्र छविराज कन्नौजिया निवासी कबूलपुर थाना जफराबाद जनपद जौनपुर हालपता मुर्खा थाना चन्दवक जनपद जौनपुर बरामदगी– 1– एक अदद समर सेबिल मोटर। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम के सदस्य– 1. थानाध्यक्ष श्री रमेश कुमार थाना

चन्दवक जनपद जौनपुर। 2. उ0नि0 श्री जितेन्द्र बहादुर सिंह चौकी प्रभारी बजरंगनगर थाना चन्दवक जनपद जौनपुर। 3. हे0का0 विजय दूवे थाना चन्दवक जनपद जौनपुर। 4. हे0का0 सुमन्त सिंह थाना चन्दवक जनपद जौनपुर। 5. का0 सचिन यादव थाना चन्दवक जनपद जौनपुर। 6. का0 शनि वर्मा थाना चन्दवक जनपद जौनपुर। 7. का0 अजय यादव थाना चन्दवक जनपद जौनपुर। 8. का0 सूरज कुमार थाना चन्दवक जनपद जौनपुर। 9. का0 राहुल कुमार यादव थाना चन्दवक जनपद जौनपुर ।

थाना खेतासराय पुलिस ने गोवध के मुकदमें में चल रहे वांछित अभियुक्त को किया गिरफ्तार

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : श्री अजय कुमार साहनी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जौनपुर द्वारा जनपद में अपराध की रोक थाम व अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे सघन अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक नगर डा0 श्री संजय कुमार के निर्देशन व क्षेत्राधिकारी शाहगंज जौनपुर श्री अंकित कुमार के पर्वेक्षण में थानाध्यक्ष यजुवेंद्र कुमार सिंह मय हमराह पुलिस बल द्वारा चेकिग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर मु0अ0सं0 66/2022 धारा 3/5A/8 उ0 प्र0 गोवध निवारण अधिनियम व 11 पशु क्रूरता अधिनियम व 420/467/468/471/120 बी भादवि थाना खेतासराय जनपद जौनपुर गोवध में चल रहे वांछित अभियुक्त अमन प्रताप सिंह पुत्र शेषमणि सिंह निवासी चूड़िया थाना लार जनपद देवरिया को आजाद नगर पुलिया के पास से आज दिनांक 07/07/2022 को समय 11:40 बजे गिरफ्तार किया गया। पूछताछ पर बताया कि मै स्थानीय स्तर पर पत्रकारिता का कार्य करता हूँ विगत कुछ दिन पूर्व सन्तोष ग्राम प्रधान निवासी सहजवाँ थाना लार जनपद देवरिया तथा राजा भाई निवासी शाहगंज व सहाबुद्दीन निवासी पटैला मेरे पास आये और मुझसे उन लोगो ने गोवंशो की गाड़ी पास कराने की बात कही और 3000 रूपये प्रति गाड़ी देने की बात कही तो मैं उन लोगो के प्रस्ताव को आय का सुलभ तरीका पाकर अपने स्थानीय पत्रकारिता का प्रभाव का उपयोग कर गोवंशो की गाड़ियों को पास कराने लगा । कभी दो गाड़िया , कभी तीन गाड़िया आती थी आगे आगे उपरोक्त

सन्तोष , सहाबुद्दीन, राजा भाई मुझसे मिलकर अवगत कराते कि गाड़िया आ रही है तो मैं सतर्क हो जाता था और स्थानीय पुलिस की लोकेशन ज्ञात कर उनसे बचाकर उक्त गोवंशो की गाड़ियों को मै पास करा देता था यह गाडियां हफ्ते में दो दिन जाती थी । इस प्रकार उक्त कार्य करने से प्रति सप्ताह दस – पन्द्रह हजार रूपये मुझे आसानी से मिल जाता था । तभी से यह सिलसिला चल रहा है । गिरफ्तार अभियुक्तः– 1. अमन प्रताप सिंह पुत्र शेषमणि सिंह निवासी चूड़िया थाना लार जनपद देवरिया गिरफ्तारी करने वाली टीम के सदस्य– 1. यजुवेंद्र कुमार सिंह, थानाध्यक्ष थाना खेतासराय जौनपुर। 2.उ0नि0 शान मोहम्मद थाना खेतासराय जौनपुर। 3.का0 दिनेश यादव का0 दिनेश सरोज का0 अमरनाथ यादव थाना खेतासराय जनपद जौनपुर

शिक्षा बच्चों तक पहुंचे चाहे वह किसी भी तरह से हो –बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : प्राथमिक शिक्षा स्तर को बेहतर करने के लिए प्रदेश सरकार कटिबद्ध है तो वहीं इसके विभाग के मंत्री भी समय–समय पर स्कूलों का औचक निरीक्षण कर रहे हैं। इसी के तहत शुक्रवार को वारणसी से लखनऊ जाते समय सिरकोनी ब्लाक के बाकराबाद उच्च प्राथमिक विद्यालय का निरीक्षण बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह ने किया। इस दौरान स्कूल की सभी शिक्षिकाएं और शिक्षक साथ ही जिले के अन्य स्कूलों के भी शिक्षक वहां उपस्थित रहे।मंत्री ने कक्षा में जाकर बच्चों से पढ़ाई के बारे में जानकारी लिया। बच्चों द्वारा सवाल जवाब की बेहतर प्रदर्शन से व शिक्षकों की कार्य कार्यप्रणाली से मंत्री संतुष्ट नजर आए। मीडिया से बात करते हुए मंत्री संदीप सिंह ने कहा कि आज लखनऊ जा रहा हूं रास्ते में विद्यालय था तो मैं यहां पर रुक गया हूं देखने के लिए सभी छात्र बड़े उत्साहित हैं सभी शिक्षक भी अच्छी तरह से सारा पठन–पाठन का कार्य करा रहे हैं। विद्यालय में आकर देख कर के जो व्यवस्था है बहुत अच्छी लगी हम सब लोगों का प्रयास है शिक्षा व्यवस्था को और बेहतर बनाया जाए। मुझे लगता है अभी भी और बेहतर करने की जरूरत है। बच्चों के शिक्षा के लिए छात्रों की संख्या को लेकर शिक्षकों द्वारा बेहतर का कार्य किया गया है। बच्चों के पठन–पाठन को लेकर हम सब बच्चों की शिक्षा को लेकर बहुत चिंतित हैं बच्चों के अभिभावकों में भी अब के सरकारी विद्यालयों के प्रति विश्वास जगह है अपने बच्चों को सभी लोग प्राथमिक विद्यालयों में भेजकर पठन–पाठन का कार्य कराना है। हमारा लक्ष्य स्कूल चलो अभियान के तहत दो करोड़ बच्चों को जोड़ सकें इसको लेकर हम सब कठिन परिश्रम कर रहे हैं। आने वाले वर्ष में सभी बच्चे विद्यालय में पहुंच जाएंगे इस वर्ष लगभग 1 करोड़ 90 लाख बच्चे इसके आंकड़े को छू चुके हैं। पूरे जुलाई सप्ताह में हमारे स्कूल चलो अभियान चलेगा आने वाले समय में भी स्कूलों में स्मार्ट क्लास चलाएंगे स्कूलों में बेहतर फर्नीचर लगाएंगे आने वाले सत्र में हैं हम लोग 20 हजार स्कूलों को बेहतर बनाने का प्रयास करेंगे ।जहां पर स्मार्ट क्लास और बेहतर फर्नीचर लगाकर बच्चों को सुविधाएं प्रदान करेंगे। आगामी दिनों में प्रधानमंत्री मोदी जी और मुख्यमंत्री योगी जी के निर्देशन में शिक्षा विभाग को और बेहतर बनाने का संकल्प लिया है। जिसे पूरा करने के लिये काफी जिलों में शिक्षकों ने बेहतर काम किया है। उन्होंने बच्चों को स्कूल से जोड़ने का काम किया है कि स्कूल चलो अभियान के तहत बेहतर काम किया जा रहा है। सभी अधिकारी सभी शिक्षक मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप कोई भी गांव में ऐसा करना रहे जहां तक बच्चे शिक्षा ग्रहण कर पाए। सभी को विद्यालय पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। हमारी सरकार इसके लिए कटिबद्ध हैं ।सरकारी स्कूलों के आसपास प्राइवेट विद्यालयों को शिक्षा विभाग द्वारा मान्यता दिए जाने को लेकर उन्होंने कहा कि हमारे बस इतना प्रयास है कि बच्चे पढ़ें चाहे वह किसी विद्यालय में पढ़े प्राइवेट विद्यालय में या सरकारी विद्यालय में हमारा उद्देश्य सिर्फ है कि वह शिक्षा बच्चों तक पहुंचे वह किसी भी रूप में हो। मंत्री के आने परअन्य विद्यालयों के शिक्षकों के सवाल पर उन्होंने कहा कि मुझे इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है आगे से ध्यान रखूंगा कि हमारे विद्यालय आने पर अन्य दूसरे विद्यालयों के शिक्षक ना कि शिक्षक या हमारे आने को लेकर काफी उत्साहित हैं।

आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होने से लेखपालों में रोष

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : गौराबादशाहपुर जौनपुर थाना क्षेत्र के इटैली गांव में पैमाईश करने गए लेखपाल संग की गई मारपीट के मामले में मुकदमा दर्ज होने के बावजूद आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होने से लेखपालों में नाराजगी है उन्होंने सीओ गौरव शर्मा से गिरफ्तारी कराने की मांग की। सीओ ने शीघ्र कर्रवाई का अश्वासन दिया है। मामला मुफ्तीगंज ब्लाक के इटैली गांव से जुड़ा है। एसडीएम के निर्देश पर राजस्व और पुलिस की संयुक्त टीम बीते 29 जून को गांव के एक चकमार्ग की पैमाईश करने गई थी। आरोप है कि पैमाईश के दौरान गांव के हवलदार, रामचन्द्र, पवन, संदीप, अंशुल, अवशेष, उमाशंकर और दीपक ने सरकारी अभिलेख फाड़ दिया और लेखपाल उमेश यादव से मारपीट की उमेश ने गौराबादशाहपुर थाना में उक्त आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। शिकायत है कि एक सप्ताह से अधिक दिन बीत गए आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं की गई है। लेखपालों ने सीओ गौरव शर्मा से मिलकर कर्रवाई की मांग की जिस पर उन्होंने शीघ्र कर्रवाई का अश्वासन दिया है।

जिलाधिकारी द्वारा प्राथमिक विद्यालय हैदरगंज एवं मीरगंज का किया गया औचक निरीक्षण

जौनपुर सू.वि. : जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा के द्वारा प्राथमिक विद्यालय हैदरगंज एवं अभिनव प्राइमरी विद्यालय मीरगंज का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण में पाया कि प्राथमिक विद्यालय हैदरगंज में कुल 158 बच्चे नामांकित है। कुछ बच्चे यूनिफॉर्म पहनकर नहीं आए थे, जिस पर नाराजगी व्यक्त करते हुए बेसिक शिक्षा अधिकारी डा0 गोरखनाथ पटेल को निर्देशित किया कि अभिभावकों के साथ बैठक कर उन्हें निर्देशित किया जाए कि जो पैसे डीबीटी के माध्यम से उनके खाते में भेजे गए हैं उसके द्वारा बच्चों को अनिवार्य रूप से यूनिफॉर्म खरीद कर ही विद्यालय भेजें। इस दौरान जिलाधिकारी के द्वारा कक्षा 05 के छात्र अंश एवं कक्षा 01 की छात्रा करुना से गणित के सवाल एवं उनका नाम ब्लैक बोर्ड पर लिखवाया। जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि एआरपी के द्वारा नियमित रूप से नगर क्षेत्र के विद्यालयों की जांच की जाए और बच्चों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना सुनिश्चित किया जाए। बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देश दिया कि सूचना दें कितने विद्यालयों में सिलेंडर पर खाना बन रहा है। इस दौरान जिलाधिकारी के द्वारा मिड–डे–मील में बने खाने को खाकर खाने की गुणवत्ता की जाँच की। अभिनव प्राइमरी स्कूल मीरपुर के निरीक्षण के दौरान पाया कि विद्यालय में कुल 393 बच्चे नामांकित है। उन्होंने कक्षा 3 के अंश चौरसिया एवं अनुज से गणित के सवाल हल करवाएं। उन्होंने मिड डे मील में दी जा रही खाने की गुणवत्ता की जांच की और प्रभारी प्रधानाध्यापक मुकेश सिंह को निर्देशित किया कि बच्चों को नाखून काटना, हाथ धोने का तरीका सहित अन्य मूल–भूत आदते सीखाई जाय, ताकि वह अभी से अपने जीवन में उतार सके। जिलाधिकारी ने नए क्लास का प्रस्ताव देने के भी निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने कहा कि जन सहयोग एवं पुरातन छात्रों के द्वारा स्कूलों का कायाकल्प कराया जाएं। इस अवसर पर डीसी निर्माण रजा हसन, मिड–डे–मील के इंचार्ज अरुण मौर्य, सहायक अध्यापिका नीति सिंह, शिक्षा मित्र कमलेश कुमारी सहित अन्य उपस्थित रहे।

शहीद का शव पहुंचते ही सबकी आंखें हुईं नम

गोरखपुर ब्यूरो : जम्मू कश्मीर के पुंछ सेक्टर में शहीद हुए ऋषिकेश चौबे (24) का तिरंगे से लिपटा पार्थिव शरीर बृहस्पतिवार को घर पहुंचते ही सबकी आंखें नम हो गईं। उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए तांता लगा रहा। इसके पहले गोरखा रेजीमेंट के जवानों ने श्रद्धांजलि दी। जानकारी के मुताबिक जवान का पार्थिव शरीर बृहस्पतिवार को करीब 4 बजे एयरपोर्ट पर आया। वहां से गोरखा रेजीमेंट के जवान पार्थिव शरीर को लेकर उनके घर पहुंचे। तिरंगे में लिपटे पार्थिव शरीर को देखकर लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। ऋषिकेश अमर रहे के नारे लगाने लगे। मूल रूप से देवरिया के रहने वाले थे ऋषिकेश। मूल रूप से देवरिया के सोहनपुर बनकटा निवासी राजेश चौबे गोरखपुर के खोराबार इलाके के जंगल सिकरी स्थित रामअवधनगर कॉलोनी में 20 वर्ष से मकान बनवाकर रहते हैं। उनके दो बेटों में बड़े बेटे ऋषिकेश सेना में थे। उनका छोटा भाई राहुल अभी पढ़ाई करता है। पिता भी थे सेना में। ऋषिकेश के पिता राजेश चौबे भी सेना में थे। वह 2019 में रिटायर हुए हैं। उनके रिटायर होने से एक साल पहले वर्ष 2018 में ऋषिकेश थलसेना की पंजाब स्थित 40 नंबर बटालियन में भर्ती हुए। पंजाब में ही उनकी ट्रेनिंग हुई। इसके बाद कुछ समय तक वह पंजाब में तैनात रहे। फिर उनकी तैनाती जम्मू कश्मीर के पुंछ में हो गई। 6 जुलाई 2022 को अभ्यास के दौरान रॉकेट लांचर का गोला फटने के कारण उनकी मौत हो गई। सात माह पहले हुई थी शादी। ऋषिकेश ने गोरखपुर स्थित आर्मी स्कूल में छठवीं तक की पढ़ाई की। इसके बाद वो मथुरा, चंडीगढ़ और अंबाला आर्मी स्कूल में पढ़े। सात माह पहले 12 दिसंबर 2021 को उनकी शादी बिहार प्रांत के छपरा निवासी ज्योति से हुई थी। पति की मौत की खबर जब 6 जुलाई की रात फोन पर ज्योति को मिली तो वह दहाड़े मारकर रोने लगीं। पति का पार्थिव शरीर घर पहुंचा तो वह लिपट गईं। कुछ ही देर में उनके आंसू सूख गए। वह बोल पड़ीं कि उन्हें पति पर गर्व है। तीन माह पहले आए थे छुट्टी पर, फोन पर पूछा था पिता का हाल पिता राजेश ने बताया कि तीन माह पूर्व ऋषिकेश छुट्टी पर जंगल सिकरी स्थित घर आए थे। अब वह आगामी 20 जुलाई को छुट्टी पर घर आने वाले थे। अभी चार दिन पहले ही उन्होंने फोन कर पिता से बात की थी। ऋषिकेष के एक चाचा और दादी गुलाबी देवी गांव में रहती हैं। तीन चाचा और दो चचेरे भाई भी सेना में हैं।

क्षेत्र पंचायत की बैठक सम्पन्न : 90करोड़ का प्रस्ताव पास हुआ

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना अधिनियम की खुली बैठक की अध्यक्षता ब्लॉक प्रमुख उषा देवी ने किया शुक्रवार कोबैठक मेंक्षेत्र पंचायत सदस्य व प्रधान गण व क्षेत्र के सम्मानित सदस्य उपस्थित रहे । मनरेगा अंतर्गत वर्ष 2022–23 कार्य योजना सम्बंधित सम्मानित क्षेत्र पंचायत सदस्यों से लिया गया नरेगा से सम्बंधित कार्यो का विवरण दिया गया ।जिसे कार्यवाही केअंतर्गत लेते हुए सर्व सम्मति से पारित किया गया। खण्ड विकास अधिकारी , पूर्व प्रमुख विनय कुमार सिंह वर्तमान प्रमुख उषा देवी द्वारा विस्तृत जानकारी देते हुए कार्य योजना की मांग की गई जिसमें कुल90 करोड़ का प्रस्ताव पास हुआ ।इसके बाद कोई प्रस्ताव नही आया । जिसमे क्षेत्र पंचायत सदस्य व प्रधान गण व क्षेत्र के सम्मानित सदस्यों की उपस्थिति में बाढ़ नियंत्रण ,वृक्षारोपण , जलसंचयन ,अमृत सरोवर कार्य ,तालाब खुदाई के बारे में विस्त्रित चर्चा की गई। मुख्य अतिथिपूर्व ब्लॉक प्रमुख विनय कुमार सिंह ने अपने स म्बोधन में कहा कि इस समय वृक्षारोपण ज्यादा से ज्यादा किये जांय उन्होंने कहा कि गाँवो में सड़क ,आवास आदि की कोई समस्या हो तो अवगत कराएं । इस अवसरपर खण्ड विकास अधिकारी रवि कुमार सिंह , सहायक विकास अधिकारी विपिन राय, अजय सिंह ,डॉ ऋचा राय ,अनूप दीक्षित ,कमलेश यादव ,ग्राम पंचायत व ग्राम विकास अधिकारी,एडीओ पंचायतआदि लोगो की उपस्थिति रही । संचालन हरिदयाल लेखाकार ने किया।

देश की उपासना हिंदी समाचार पत्र व एनबीसी चैनल की मासिक बैठक शहर के एम थ्री कैफे एंड रेस्टोरेन्ट में सम्पन्न

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या)शहर के देवकाली –रीडगंज सम्पर्क मार्ग पर स्थित एम थ्री कैफे एंड रेस्टोरेन्ट पर देश की उपासना हिंदी समाचार पत्र व नव भारत चेतना न्यूज चौनल की हमेशा तरह मासिक बैठक आयोजित की गई।इस मासिक बैठक में देश उपासना हिंदी समाचार पत्र के संपादक व नव भारत चेतना न्यूज चैनल की संपादक ममता मिश्र के दिशा निर्देश पर कई महत्वपूर्ण विंदुओ पर चर्चा की गई।इस मौके पर देश की उपासना हिंदी समाचार पत्र व नव भारत चेतना न्यूज चैनल के सम्मानित पत्रकारो ने एक स्वर में बात स्वीकार किया कि जो भी समाचार देश की उपासना हिंदी समाचार पत्र व नव भारत चेतना न्यूज चैनल पर प्रकाशित हो वह सत्य परख, विश्वसनीयता के साथ साथ समाज में रह रहे लोगों की समस्याओं से संबंधित हो।जिससे समाचार पत्र व न्यूज चैनल की विश्वसनीयता समाज में बने रहे।इस मौके पर देश की उपासना हिंदी समाचार पत्र व नव भारत चेतना न्यूज चैनल अयोध्या के ब्यूरो चीफ राजेश श्रीवास्तव ने यहाँ पर उपस्थित सभी सम्मानित पत्रकारो से अपील किया कि जहाँ तक हो आपके माध्यम से जो समाचार देश की उपासना हिंदी समाचार पत्र में प्रकाशित हो वह व्यक्ति के समस्याओं से जुड़ी हो। क्योंकि समाचार व चैनल सरकार व समाज को जोड़ने की एक

कड़ी का एक माध्यम है।केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं को जनता तक पहुँचाना तथा जनता की समस्याओं को सरकार तक पहुँचाना हमारा सम्मानित समाचार पत्र व न्यूज चैनल के माध्यम से ही संभव है।इसलिए समाचार पत्र व न्यूज चैनल समाज का एक आईना है। इसलिये जहाँ तक संभव हो।आप सभी सम्मानित पत्रकार जो भी समाचार दे तो वह सत्य परख, व्यक्ति की समस्याओं को उजागर करने वाला हो। क्योंकि जब व्यक्ति को न्याय मिलेगा तो समाचार पत्र व नव भारत चेतना न्यूज चैनल की विश्वसनीयता बढ़ेगी। इस मौके पर जिला संवाददाता डाक्टर अजय तिवारी,नगर संवाददाता सरवन कुमार,अयोध्या संवाददाता डाक्टर आलोक श्रीवास्तव,संवाददाता अमित कुमार मणि त्रिपाठी,संवाददाता सुरेन्द्र कुमार सहित सभी सम्मानित पत्रकार लोग मौजूद रहे।

लखनऊ में डीजी हेल्थ की गाड़ी से लिफ्ट मांगना परिवहन विभाग के सिपाही को पड़ा महंगा : अयोध्या आरटीओ ने किया निलंबित

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) सूत्र के मुताबिक डीजी हेल्थ की गाड़ी से लिफ्ट मांगकर परिवहन विभाग का सिपाही उस समय बुरी तरह से फंस गया जब सिपाही पर बीच रास्ते वाहनों की चेकिंग करते हुए वसूली का आरोप लगा।जब इसका वीडियो वायरल हुआ और सिपाही ओम प्रकाश को अयोध्या के आरटीओ संजय सिंह ने शुरूआती जांच में दोषी मानकर निलंबित कर दिया।वही इस पूरे मामले की जांच बाराबंकी एआरटीओ प्रशासन अंकिता शुक्ला को सौंप दी।सूत्र के मुताबिक इस जांच की रिपोर्ट तीन दिनों के भीतर अयोध्या आरटीओ को सौंपी जाएगी।गौरतलब हो कि डीजी हेल्थ की गाड़ी से सिपाही का वसूली करते हुए वीडियो वायरल होने की खबर प्रकाशित होने पर सिपाही को तलब किया गया था।वहीं निलंबित सिपाही ने गुरुवार को परिवहन आयुक्त कार्यालय आकर उप परिवहन आयुक्त निर्मल प्रसाद को अपना बयान दर्ज कराया।इस संबंध में सिपाही ओम प्रकाश ने बताया कि वह तीन जुलाई से छुट्टी पर था। उसी रात अयोध्या से लखनऊ अपने भांजे को मेडिकल कालेज में भर्ती कराकर अयोध्या वापस जाने के लिए पालीटेक्निक चौराहे पर गाड़ी का इंतजार कर रहा था।इस दौरान सिद्धार्थनगर अस्पताल से संबद्ध डीजी हेल्थ की टाटा सूमो वहां से गुजरी और मैंने गाड़ी के ड्राइवर से लिफ्ट मांग लिया।

दलित युवती ने झाड़फूक के बहाने महंत पर रेप करने का लगाया आरोप : पुलिस के मुताबिक पूछताछ जारी

अयोध्या।(डाक्टर अजर तिवारी जिला संवाददाता) जिले के कोतवाली अयोध्या नया घाट स्थित एक मंदिर के महंत पर एक दलित युवती ने झाड़–फूंक के बहाने रेप करने का आरोप लगाया है।सूत्र के मुताबिक दलित युवती का आरोप है कि महंत ने पूजा पाठ के बहाने उसके साथ यह घटना अंजाम दी।वही पीड़िता के अनुसार वह बहुत चीखी चिल्लाई, लेकिन मंदिर में चल रहे भजन के कारण कोई उसकी गुहार नहीं सुन सका।इस संबंध में जहाँ एक ओर कोतवाली अयोध्या निरीक्षक ने बताया कि इस मामले पुलिस पूछताछ कर रही है।हालांकि सीओ अयोध्या डॉ. राजेश तिवारी का कहना है कि अभी तक उनके सामने ऐसा कोई मामला नहीं सामने आया है।यदि आता है तो आरोपी के खिलाफ नियमानुसार विधिक कार्यवाही की जाएगी।इस संबंध में पीड़िता की ओर से दी गई तहरीर के मुताबिक वह बीकापुर तहसील क्षेत्र की निवासी है।तहरीर के अनुसार एक बात को लेकर आरोपी के यहां दो दिनों से पूजा पाठ चल रही थी। इस दौरान उसके माता–पिता को यह कहकर राम की पैड़ी में पैर डाल कर बैठने के लिए कह दिया जाता था कि पूजा में लाभ होगा।पीड़िता के अनुसार बुधवार शाम 5 बजे उसे बुलाया गया और रोज की तरह

माता–पिता को भेज दिया गया।आरोप है कि अकेला पाकर महंत ने पीड़िता को कमरे में बंद कर पूजा के बहाने रेप किया।पीड़िता का आरोप है कि महंत बार–बार उसे धमकी दे रहा था कि किसी को न बताना और तुम्हारा परिवार समाप्त हो जायेगा।पीड़िता के अनुसार जब वह घर पहुंची तो गाड़ी से उतरते ही बेहोश हो गई फिर परिवार को घटना की जानकारी दी।हालांकि अभी तक अयोध्या पुलिस ने मामले में कोई अभियोग नहीं दर्ज किया है।

आज के युग में वृक्षों के महत्व की बड़ी आवश्यकता–रोली सिंह

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) वन महोत्सव 35 करोड़ पौधरोपण जन आन्दोलन वर्ष 2022 आजादी अमृत महोत्सव उत्तर वन विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम विल्हर घाट गंगोली मार्ग कादीपुर में मुख्य अतिथि श्रीमती रोली सिंह जिला पंचायत अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री के नेतृत्व में वन महोत्सव कार्यक्रम 35 करोड़ पौधरोपण जन आन्दोलन के तहत जिपं अध्यक्ष रोली सिंह ने किया पौधरोपण और कहा कि आज के युग में वृक्षों के महत्व की बड़ी आवश्यकता है पृथ्वी पर वृक्षों के आधा धुंध कटाई के कारण प्रदूषण और पर्यावरण प्रभावित हो रहा है।जो कि बढ़ता हुआ प्रदूषण मानव जीवन के लिए बड़ा ही हानि कारक है।यह बातें ब्लॉक मया के अंतर्गत बिल्हार घाट गंगोली मार्ग ग्राम कादीपुर के आयोजित पौधरोपण कार्यक्रम में कही उन्होंने कहा कि बढ़ता हुआ पर्यावरण प्रदूषण हमे अनेकों प्रकार की बीमारियों के मुंह की और खीच रहा है।इससे बचने के लिए प्रत्येक नागरिकों को फल व छाया दार वृक्ष जैसे आम,पीपल,नीम,जामुन आदि तरह तरह के पौधे लगाना चाहिए जिससे बढ़ते हुए प्रदूषण को रोका जा सके।इस मौके पर गांव के सम्मानित लोगों ने भी पौधरोपण कार्यक्रम को सफल बनाने व सहयोग देने का संकल्प लिया। जिपं अध्यक्ष प्रतिनिधि आलोक सिंह रोहित ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि अधिक से अधिक पौधरोपण करें जिससे पृथ्वी को स्वच्छ व शुद्ध वातावरण मिल सके। इस मौके पर डी0 एफ0ओ0 चित्रांशु पाण्डेय रेंजर डीपी सिंह नन्द कुमार सिंह मण्डल अध्यक्ष भाजपा देवता प्रसाद जिपं सदस्य , रामपति वर्मा जि पं सदस्य , देवेन्द्र प्रताप सिंह रामप्रीत वर्मा विजय बहादुर सिंह लाल साहब सिंह भूपेन्द्र महेश पांडे जगदम्बा तिवारी राजेश पाठक राजा सिंह शोभा राम वर्मा तमाम ग्रामीण मौजूद रहे।

अयोध्या रेंज अयोध्या के सुल्तानपुर जेल में बंदी की मौत से पुलिस विभाग में मचा हड़कंप

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) अयोध्या रेंज अयोध्या के सुल्तानपुर जिले के कोतवाली नगर क्षेत्र में गुरूवार देर रात जेल में बंद एक बंदी ने संदिग्ध परिस्थितयों में फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया। खबर मिलते ही जेल स्टॉफ के साथ–साथ पुलिस के भी हाथ–पांव फूल गए।जिसके चलते आनन–फानन में पुलिस टीम घर पहुंची और परिजनों को पहचान के लिए लेकर गई।सूत्र के मुताबिक यह घटना सुल्तानपुर जिले के कोतवाली नगर के खैराबाद मोहल्ले की है।इरशाद उर्फ टिल्लू पुत्र स्व. बदलू को करीब पंद्रह दिन पहले कोतवाली पुलिस ने चोरी के मामले में पकड़कर जेल भेजा था। गुरूवार देर रात जेल के बंदियों से स्टॉफ को सूचना मिली कि इरशाद ने फांसी लगा लिया है तो वहां हड़कंप मच गया।जेल के अधिकारी तुरंत मौके पर पहुंचे, कोतवाली पुलिस को भी घटना की सूचना दिया गया।इसके बाद रात करीब दो बजे के आसपास कोतवाली पुलिस मृतक के घर पर पहुंची। परिवार वालों को उसकी मौत की खबर दिया और पहचान के लिए घर के सदस्यों को लेकर गई।वहीं दबी जुबान परिवार के लोग कह रहे हैं कि पुलिस ने ले जाकर पिटाई किया था और इलाज नहीं कराया जिसके अभाव में उसकी मौत हो गई है।फिलहाल शव को पोस्टमार्टम में भेजकर जांच शुरू कर दी गई है।सूत्र के लिए मृतक बंदी पूर्व में भी कई बार चोरी के मामले में जेल जा चुका है।

सीएम से तहसीलदार की शिकायतों की जांच शुरू

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य को तहसीलदार सोहावल जनविरोधी भ्रष्टाचार में लिप्त होने की गई शिकायत पर शासन से जांच शुरू हो गई है जिसकी पुष्टि एसडीएम सोहावल मनोज कुमार श्रीवास्तव ने की है। जिले की सोहावल तहसील मे जनता का शोषण रुकने का नाम नहीं ले रहा है।लगातार दाखिल खारिज और बारासत दर्ज करने आबादी घोषित करने हकबरारी वादो के निस्तारण न होने से पीड़ितों की संख्या बढ़ रही है।उनके मामलों का निस्तारण तहसील प्रशासन द्वारा नहीं किया जा रहा है जिसके चलते पूर्व में आयोजित तहसील समाधान दिवस में जिलाधिकारी के सामने ही बड़ी संख्या मे मामले आए थे और उनके निस्तारण को लेकर ड्यूटी पर लगे लेखपाल द्वारा पीड़ितों को अधिकारी से न मिलने देने और मामलो की शिकायत से रोकने के मामले को लेकर पत्रकारों से दुर्व्यवहार का भी मामला सामने आया था। वहां पर तैनात तहसीलदार पवन कुमार गुप्ता के द्वारा किये जा रहे जन विरोधी कार्यों के विवरण के मामले में मांगी गई 5 बिंदु की जन सूचना 17 जून से लंबित है परंतु अभी तक इसका जवाब तहसील प्रशासन द्वारा नहीं दिया गया है। भ्रष्टाचार के आरोपी उपरोक्त तहसीलदार के खिलाफ मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार एवं उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य से की गई शिकायतो के आदेश से जांच भी शुरू हो गई है।इसी बीच में तहसील प्रशासन की एक बड़ी लापरवाही भी सामने आई है घूस के आरोप में इंटेलिजेंस विभाग द्वारा जेल भेजे गए कानूनगो नरसिंह नारायण लाल श्रीवास्तव के नाम और हस्ताक्षर से खतौनी जारी की जा रही हैं। भाजपा नेता और समाजसेवियों की शिकायत का संज्ञान लेने से पूरी तहसील में हड़कंप मचा हुआ है फिर भी तहसील में जनता के कार्य नही हो रहे है। जिसके चलते भारतीय जनता पार्टी के लोकप्रिय सरकार की छवि को भी काफी धक्का लग रहा है।

शिक्षा विभाग के लापरवाह अधिकारी व कर्मी के रहमो करम से बीकापुर तहसील क्षेत्र में धड़ल्ले से चल रहा फर्जी स्कूलों का गोरखधंधा

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) जिले में संबंधित विभाग के लापरवाह अधिकारी व कर्मी के रहमो करम से जिले के बीकापुर तहसील क्षेत्र में फर्जी स्कूलों का भंडाफोड़ तेजी से हो रहा है।ऐसे दर्जनों से ज्यादा स्कूलों को चिन्हित किया गया है जो फर्जी तरीके से चल रहे हैं।कोई मदरसे की मान्यता लेकर स्कूल चला रहा है तो कोई प्राइमरी की मान्यता पर 12वीं तक क्लासेस संचालित कर रहा है।सूत्र के मुताबिक बीकापुर तहसील क्षेत्र के कोछाबाजार, हैदरगंज, चोरेबाजार, खजुरहट,तारुन, जाना बाजार, नन्सा बाजार,कनावा, मोतीगंज क्षेत्र में कुछ इसी तरह दर्जनों फर्जी स्कूलों का संचालन जारी है।कक्षा एक से पांच तक की मान्यता है. लेकिन क्लास 12 तक संचालित हो रही हैं. जो नियम विरुद्ध है।इसमें नर्सरी से लेकर कक्षा 12 तक के बच्चों को शिक्षा दी जा रही है और कोई नहीं जानता कि इन बच्चों के बोर्ड के फार्म कहां से भरे जा रहे हैं।इन विद्यालयों के बच्चों का प्रवेश किसी मान्यता प्राप्त वित्तविहीन विद्यालय में दिखाया जाता है, लेकिन कक्षाएं कहीं और चलती हैं।कई विद्यालय ऐसे हैं जिनकी मान्यता आठवीं तक की है, लेकिन दसवीं और बारहवीं की कक्षाएं भी संचालित की जा रही हैं।शिक्षा विभाग के सूत्रों की मानें तो कई प्रभावशाली लोग शिक्षा के इस गोरखधंधे में शामिल हैं। यही कारण है कि बेसिक और माध्यमिक शिक्षा विभाग सब कुछ

जानकर भी अनजान बने हुए हैं। जब ऊपर से कार्रवाई का निर्देश आता है तो एकाध स्कूलों पर छापा मारकर खानापूर्ति करके उच्चाधिकारियों को रिपोर्ट भेज दी जाती है। कुछ दिन बाद शिक्षा की ये दुकानें फिर सज जाती हैं। बीकापुर क्षेत्र में ऐसे बेलगाम पनप रहे फर्जी बेसिक और माध्यमिक स्कूलों पर अंकुश लगा पाने में विभाग अक्षम साबित हो रहा है।निशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई)–2009 की धारा–18 (ए) में स्पष्ट प्रावधान है कि बिना मान्यता लिए कोई भी स्कूल संचालित नहीं किया जाएगा। यदि ऐसे स्कूल संचालित पाए जाएं तो उन पर कार्रवाई कर जुर्माना वूसला जाए।यह दंड एक लाख रुपए तक हो सकता है।

शिक्षकों के परिवारी जनों द्वारा उठाई जा रही आपत्तियों का पूर्व मंत्री तेज नारायण ने किया समर्थन

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) पूर्व मंत्री तेज नारायण पांडेय पवन ने शहर के बहुचर्चित शिक्षिका सुप्रिया वर्मा की हत्या के खुलासे के बाद पुलिस द्वारा हत्या का जो उद्देश्य स्थापित किया जा रहा है के बारे में शिक्षकों के परिवारी जनों द्वारा उठाई जा रही आपत्तियों का समर्थन किया । उन्होंने कहा कि शिक्षिका के चरित्र पर कीचड़ उठाया जाना आपत्तिजनक है श्री पांडेय ने कहा कि जब मृतका के माता पिता को तथा अन्य आम जनता को पुलिस के द्वारा बताई जा रहे हत्या के उद्देश्य पर विश्वास नहीं है तब प्रशासन किसी अन्य एजेंसियों से जांच कराकर हत्या का असल उद्देश्य लाना चाहिए तथा मृतका के चरित्र पर हनन के प्रयास से बचना चाहिए । श्री पांडेय ने कहा कि परिवार यूं ही शिक्षकों की नर्शस हत्या से दुखी है ऊपर से उसके चरित्र पर कीचड़ उछालने से डबल मानसिक वेदना झेलनी पड़ रही है श्री पांडेय ने कहा की पुलिस ने सिर्फ आरोपी के बयान को ही आधार बनाकर मृतका के साथ आरोपी के प्रेम प्रसंग की कहानी गढी है जैसा कि परिवार जनों का आरोप है कि पुलिस के पास अन्य कोई सबूत नहीं है तो जरूरी हो जाता है कि अन्य किसी एजेन्सी से जांच करा कर पीड़िता के परिवार को इंसाफ दिलाने का काम करें।

वन महोत्सव : हरीतिमा पर्व पर छात्र छात्राओं ने धरा को किया हरा भरा : लगाए फलदार पौधे

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) उसरू–अमौना स्थित देवा इंटर कॉलेज में जुलाई माह के पहले सप्ताह में मनाए जाने वाले वन महोत्सव के अंतर्गत हरीतिमा पर्व का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत कई प्रकार के फलदार पौधे लगाए गए। मुख्य अतिथि व राष्ट्रीय लोक दल के महासचिव विश्वेश नाथ मिश्र, समाजसेवी महेश नारायण पांडे, विद्यालय प्रबंधान सहदेव उपाध्याय व प्रधानाचार्या नमिता मिश्रा ने कई फलदार पौधे रोपित किए। प्रकृति के प्रति जागरूकता व संवेदनशीलता उत्पन्न करने के लिए सभी शिक्षक शिक्षिकाओं व छात्र–छात्राओं को शपथ दिलाई गई कि सभी कम से कम एक पौधा अपने घर में लगाएंगे जिसे वह अपनी जिम्मेदारी से समय समय पर खाद–पानी देकर बड़ा करेंगे। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधाक ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि अपने द्वारा लगाए पौधे को अपने साथ–साथ बड़ा होते देखना पेड़ों के प्रति लगाव पैदा करता है। इससे प्रकृति को नष्ट न करने की भावना पनपती है, जो प्रकृति संरक्षण के लिए अति आवश्यक है। प्रकृति और प्राकृतिक संपदा के बिना मानव जीवन की कल्पना असंभव है। प्रकृति व जीवन एक सिक्के के दो पहलू हैं। हमें प्रकृति संरक्षण नहीं, जीवन संरक्षण के लिए वृक्षारोपण करना चाहिए। इसी क्रम में सरकार द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान का हिस्सा बनें और प्राकृतिक संपदा के उपयोग के बदले अधिकाधिक संख्या में जब, जहां, जैसे संभव हो वृक्षारोपण करें। समस्त कार्य कोऑर्डिनेटर पूर्णिमा पांडे के नेतृत्व में संचालित किए गए।

पेड़ से गिरे मजदूर की इलाज के दौरान मौत : कैंसर से पीड़ित पत्नी की भी बीते सप्ताह इलाज के दौरान हो गई थी मौत

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) रौनाही थाना क्षेत्र के मुस्तफाबाद के बड़ागांव बाजार निवासी महाराज दीन उर्फ मुगले लगभग 48 वर्ष पुत्र रामकेवल पहाड़ीपुर स्थित आम की बाग में बड़हर के पेड़ पर चढ़कर बडहर का फल तोड़ रहा था इसी बीच उसका पैर फिसल गया और ऊपर से नीचे गिर गया जिससे उसके पीछे सर फट गया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसकी मेडिकल कॉलेज स्थित इलाज के दौरान मौत हो गई। एक ही सप्ताह में पति–पत्नी की मौत से गांव में मातम का माहौल बना हुआ है। प्रधान मो0 नदीम,अखिलेश जयसवाल सुमित जयसवाल,व मो0 सोहेल,,ने बताया गंभीर हालत देख घायल मुगले को जिला चिकित्सालय के डॉक्टरों ने लखनऊ रेफर कर दिया था। जिनकी बुधवार दोपहर इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। बताया बीते सप्ताह बुधवार को कैंसर से पीड़ित उनके पत्नी की इलाज के दौरान मौत हो गई थी। एक ही सप्ताह में मां–बाप को मौत से बच्चों पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा मृतका के एक लड़के और दो लड़कियो का रो रो कर बुरा हाल है।

सरकार और शासन के निर्देश पर माध्यमिक विद्यालयों में चलाए जा रहे हैं वृक्षारोपण अभियान

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) सरकार और शासन के निर्देश पर माध्यमिक विद्यालयों में चलाए जा रहे हैं वृक्षारोपण अभियान के तहत बृहस्पतिवार को पी डी पांडे इंटर कॉलेज सोनैसा रसूलाबाद में विद्यालय के प्रधानाचार्य राकेश पांडेय के नेतृत्व मे वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। जिसमें विद्यालय परिवार द्वारा आंवला ,अमरूद,नीबू, सागौन आदि के पचीस पौधे लगाए गए। अभियान मे उपस्थित विद्यालय के नोडल अधिकारी डॉ बसंत कुमार ने विद्यालयों में पेड़ लगाने के महत्व को बताते हुए कहा की विद्यालय का वातावरण अगर हरा भरा रहेगा तो विद्यालय की रौनक और बढ़ जाती है। साथ ही बच्चों को प्राकृतिक वातावरण के पास रहने, खेलने और पौधों की विशेषता के बारे में भी उन्हें पता चलता है । इस अवसर पर विद्यालय के उप प्रधानाचार्य संजीव चतुर्वेदी ,अरविंद वर्मा, मनोज पांडेय, अनिल पांडेय, विनीत मिश्र, राधेश्याम वर्मा, सच्चिदानंद शुक्ला, अरुण द्विवेदी, संत सिंह, संदीप चक्रवर्ती, अरविंद कुमार, प्रभात गुप्ता, उमेश वर्मा, अशोक मिश्र, कृष्णा नन्द तिवारी, विजय श्रीवास्तव, संदीप मिश्र, कुलदीप तिवारी, सुनील वर्मा, रघुनाथ निषाद आदि उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने आईजीआरएस निस्तारण व हर घर तिरंगा को लेकर की समीक्षा बैठक संपन्न

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) जिलाधिकारी नितीश कुमार के निर्देश पर मुख्य विकास अधिकारी अनिता यादव ने कलेक्ट्रेट सभाकक्षा में आईजीआरएस निस्तारण, हर घर तिरंगा आदि को लेकर सम्बंधित अधिकारियों के साथ समीक्षा की गयी। उक्त अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी ने बताश्री कि आईजीआरएस निस्तारण रैकिंग में जिले की स्थिति संतोषजनक नही है इसमें सुधार लाने की आवश्यकता है। आईजीआरएस निस्तारण करते समय यह ध्यान रखा जाय कि शिकायतकर्ता की बात सुनकर ही निस्तारण आख्या प्रेषित की जाय। हर घर तिरंगा की तैयारियों की समीक्षा करते हुये कहा कि हर विभाग से तथा विकासखण्ड अधिकारी ग्राम पंचायतवार ग्राम सचिव से तिरंगा झंडा की मांग प्राप्त कर भेजे। उन्होंने बताया कि तिरंगा झंडा निर्माण हेतु एनआरएलएम की महिला समूहों को प्रशिक्षित किया जाय, जिससे कि तिरंगा झंडा निर्धारित आकृति में बनाया जा सकें। उन्होंने आगे बताया कि महिला समूहों से झंडा सिलवाकर 5 अगस्त तक सभी विभागों को उनकी मांग के अनुसार उपलब्ध करा दिया जाय। इस अवसर पर बैठक में मुख्य चिकित्सा अधिकारी, एस0पी0 सिटी, परियोजना निदेशक तथा सम्बंधित विभाग के अधिकारी व प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

मण्डलायुक्त के सभी जिलाधिकारियों से शासन द्वारा 1 जुलाई से सिंगल यूज प्लास्टिक पर लगाये गये प्रतिबंध में कड़ाई कराये

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) मण्डलायुक्त नवदीप रिणवा ने मण्डल के समस्त जिलाधिकारियों से शासन द्वारा 1 जुलाई से सिंगल यूज प्लास्टिक पर लगाये गये प्रतिबंध को कड़ाई के साथ लागू करने की अपेक्षा की है। उन्होंने मण्डल एवं जनपद स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया है कि यदि कोई व्यापारी या दुकानदार प्रतिबंधित प्लास्टिक से बनी पॉलीथीन का उपयोग करते हुये पाया जाय तो उसके विरुद्ध सख्त से सख्त कार्यवाही की जाय। उन्होंने कहा कि मंडल व जनपद स्तरीय अधिकारी व्यापार मण्डलों के सदस्यों के साथ बैठक कर प्रतिबंधित प्लास्टिक से बनी पॉलीथीन को सामान बेचने व खरीदने के लिए इस्तेमाल न करने के लिए प्रेरित किया जाए तथा प्लास्टिक से होने वाले दुरुपयोग की जानकार जानकारी दी जाए, साथ ही यह भी बताया जाए की यदि कोई दुकानदार प्रयोग में लेता पाया जाता है तो उसके विरुद्ध क्या कार्रवाई की जाएगी इसकी भी जानकारी दी जाए। उनके क्षेत्र में किसी भी सदस्य द्वारा प्रतिबंधित प्लास्टिक से बनी पॉलीथीन न बेची जाय। मंडलायुक्त ने कहा कि सिंगल यूज प्लास्टिक से होने वाली समस्याओं एवं बीमारियों के सम्बंध में जनसमूह में व्यापक प्रचार–प्रसार कर उनको जागरूक किया जाय तथा जनसामान्य को सिंगल यूज प्लास्टिक प्रयोग न करने की शपथ दिलायी जाय।

शहर के कई मोहल्लों मे पानी ना आने से मची हाहाकार

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) फैजाबाद शहर में कई मोहल्लों में पानी ना आने से हाहाकार मची हुई है हसनू कटरा मिर्जा अली बाजार गौरा पटटी साहबगंज राठ हवेली और भी कई मोहल्लों में पानी ना आने से हाहाकार मची है यहां तक कि लोगों के घरों में पीने वाला पानी तक नहीं है जिसके कारण लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है आगामी 10 तारीख को बकरीद का त्यौहार देखते हुए लोगों के घरों में साफ–सफाई व रंग रोगन का काम हो रहा है पर पानी की किल्लत है लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है एक तरफ उत्तर प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ ने साफ शब्दों में अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे जनता की समस्याओं को लेकर गंभीर रहें और जनता की समस्याओं का निराकरण किया जाए पर जिंदगी की सबसे अहम जरूरत पानी उसी की लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है विद्युत में भी अघोषित कटौती की जा रही है जिससे लोगों का बुरा हाल हो रहा।

सम्पादक मंडल
पं. लाल साहब उपाध्याय (सत्यवेदानन्द जी), बाबा शक्ति नाथ (ज्योतिषाचार्य)श्री विजय कुमार तिवारी, श्री दीपचन्द्र मौर्य (एडवोकेट), श्री सुभाष चन्द्र सेठ,श्री ऋषिकेश द्विवेदी, श्री शिवशंकर तिवारी
प्रमुख कार्यालय– हिन्दी साप्ताहिक " देश की उपासना"
पता–ई 3464,राजाजी पुरम्(निकट मिनी स्टेडियम) लखनऊ उ0प्र0
लखनऊ सम्पादक– श्री पी0सी0श्रीवास्तव मों0 9415545107

स्वात्वाधिकारी की ओर से में0 प्रभुदयाल प्रकाशन के लिए श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव पत्नी श्री प्रभुदयाल श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

सह सम्पादक
श्रीमती हेमा त्रिपाठी
मो0–7007415808,9628325542,9415034002

RNI संन्दर्भ संख्या – 24/234/2019/R-1
deshkiupasanadailynews@gmail.com

उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है,समाचार पत्र में प्रकाशित लेख/समाचारों से सम्पादक की सहमति अनिवार्य नही
समाचार–पत्र से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायलय होगा।